हरिहर ज्योतिर्विज्ञान संस्थान

# राशिफल 2023

Astrologer Brajesh Pathak
हरिहर ज्योतिर्विज्ञान संस्थान - 9341014225.

# मेष राशि का वार्षिक फलादेश वर्ष 2023

- **ब्रजेश पाठक ज्यौतिषाचार्य**

(लब्धस्वर्णपदक)

यह वर्ष मेष राशि वाले जातकों के लिए मध्यमोत्तम अर्थात् मिश्रित फलदायक है। यदि शुभ फलों की ओर नजर डालें तो धन प्राप्ति के मार्ग में उपस्थित बाधायें दूर होंगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। धन लाभ तथा धनवृद्धि होगी लेकिन वित्तिय लेन देन में सचेत रहें। स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी कम होगी लेकिन मानसिक कष्ट संभव है, भ्रम की स्थिति बनेगी, माता के स्वास्थ्य में बाधा होगी। भूमि-भवन वाहन प्राप्ति की दिशा में चल रहे प्रयास सफल हो सकते हैं। विशेषरूप से वाहन का क्रय संभव है। आजीविका प्राप्ति की दिशा में चल रहे प्रयास तो सफल होंगे, परन्तु नौकरी पेशा वाले जातक के साथ षड्यंत्र व कपटपूर्ण आचरण होना संभव है, कार्यों में बाधा आयेगी। मेष राशि के सरकारी कर्मचारियों की व्यस्तता रहेगी। कुटुम्बीजनों का सहयोग प्राप्त होगा और शत्रुगण पराभव को प्राप्त होंगे। अशुभ फलों में मेष राशि के छात्रवर्ग के प्रतियोगी परीक्षा परिणाम में विघ्न बाधायें उपस्थित होंगी। आलस्य व प्रमाद आपके विकास पथ पर बाधा उपस्थित करेंगे। विपरीत लिंगियों से सावधान रहें, अन्यथा सफलता में बाधा उपस्थित हो सकती है। मेष राशि के स्त्री वर्ग को विशेष कष्ट का सामना करना होगा। जीवनसाथी के चयन की दिशा में चल रहे प्रयासों में बाधायें आयेंगी। पारिवारिक तथा वैवाहिक जीवन में सकारात्मकता की कमी होगी। संतति सुख में बाधा उत्पन्न हो सकती है, लेकिन उनकी प्रगति होगी। भोगवादी प्रवृत्ति से बचें, अपने क्रोध संवेग पर पूर्ण नियन्त्रण रखें, अन्यथा प्रगति पथ से विमुख हो सकते हैं। न्यायालयीय कार्यों में कष्ट होगा। वर्ष 2023 के जनवरी, मार्च, जुलाई और नवम्बर मास विशेष कष्टदायी हैं। मेष राशि वालों पर इस वर्ष साढ़ेसाती या ढैया का कोई प्रभाव नहीं है। गोचर विचार में सबसे महत्वपूर्ण होता है शनि का विचार करना। इस वर्ष 17 जनवरी 2023 से शनि कुम्भ राशि में गोचर कर चुके हैं और वर्षपर्यन्त इसी राशि में रहेंगे। कुम्भ राशि मेष से ग्यारहवीं राशि है। फलदीपिका नामक ग्रन्थ में मन्त्रेश्वर ने जन्मराशि से ग्यारहवीं राशि में शनिगोचर का फल इस प्रकार कहा है –

**सौख्यान्येकादशस्थो बहुविधविभवप्राप्तिमुत्कृष्ट कीर्ति** ।[1]

अर्थात् – जब शनि जन्मकालीन चन्द्र राशि से एकादशवीं राशि में भ्रमण करे तो शुभ फलकारक होता है। इस दौरान सब प्रकार के सुख, बहुत प्रकार के वैभव, उत्कृष्ट कीर्ति आदि शुभ फल होते हैं।

गोचर विचार के दौरान शनि के बाद दूसरा सबसे महत्वपूर्ण ग्रह होता है बृहस्पति। क्योंकि शुभफलों की पुष्टता के लिए बृहस्पति को उत्तरदायी बताया गया है। इस वर्ष बृहस्पति मीन राशि में 21 अप्रैल 2023 तक और उसके बाद वर्षभर

---

[1] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.23 पृष्ठ सं.635 मोतीलाल बनारसीदास

मेष राशि में रहेंगे।[2] यह दोनों राशियाँ क्रमशः मेष से बारहवीं और पहली है। मंत्रेश्वर ने फलदीपिका में जन्मराशि से बारहवीं और पहली दोनों राशियों में बृहस्पति गोचर का अशुभफल ही बताया है।

**जीवे जन्मनि देशनिर्गमनमप्यर्थच्युतिं शत्रुतां** ।[3]

अर्थात् – यदि बृहस्पति जन्मराशि में ही गोचर करे तो देश या अपने स्थान से बाहर जाना, धन का अत्यन्त व्यय या नाश, शत्रुता आदि अनिष्ट फल होते हैं।

**रिःफे दुःखं साध्वसं द्रव्यहेतोः** ।[4]

अर्थात् – यदि बृहस्पति जन्मराशि से बारहवीं राशि में गोचर करे तो द्रव्य सम्बन्धी दुःख तथा भय, चिन्ता, उद्वेग आदि अशुभ फल होते हैं ।
इस प्रकार बृहस्पति के पक्ष से तो मेष राशि वालों के लिए वर्ष 2023 में अशुभता की अधिकता ही पुष्ट हो रही है।

वार्षिक राशिफल विचार में आधुनिक ज्योतिर्विद् राहु को भी विशेष महत्व देते हैं। अतः राहु का विचार भी मेष राशि के वार्षिक राशिफल के सन्दर्भ में प्रस्तुत करते हैं। राहु इस वर्ष मेष एवं मीन राशियों में रहेंगे। अक्टूबर तक राहु की स्थिति मेष राशि में रहेगी उसके बाद नवम्बर में राहु राशि परिवर्तन करके मीन राशि में आएँगे।[5] मेष राशि मेष से प्रथम ही है, गोचर विचार ग्रन्थ में जगन्नाथ भसीन जी ने यवानाचार्य का मत **हिमगोः पूजमसादेर्धनम्** का कट्पयादि विधि से अर्थ करते हुए राहु के प्रथम भाव में गोचर करना भी शुभफल प्रदाता बताया है। गोचर विचार में जगन्नाथ भसीन ने राहु का चन्द्रलग्न से प्रथम भाव में गोचर का फल बताते हुए लिखा है – "राहु चन्द्र लग्न में यदि गोचरवश आ जावे तो मान में वृद्धि हो, धन सम्पत्ति बढ़े, पुत्रों के धन में वृद्धि हो। चूँकि राहु चन्द्र का शत्रु है, अतः मानसिक व्यथा भी हो"।[6] इस प्रकार निष्कर्ष रुप में वार्षिक राशि फल को तीन भागों में बाँटे तो राहु एवं गुरु के कारण 40% अशुभता और राहु एवं शनि के कारण 60% शुभता रहेगी।

## निष्कर्ष रुप में निम्नलिखित महत्वपूर्ण सावधानियाँ हैं -

- दुर्घटना को लेकर सावधान रहें।
- पत्नी-पुत्र एवं परिवार के स्वास्थ्य को लेकर सावधान रहें।
- मानसिक अशान्ति को लेकर सावधान रहें।

---

[2] श्रीजगन्नाथपञ्चाङ्गम् संवत् २०८०, प्रो.मदनमोहन पाठक, पृ.सं. 37

[3] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.18 पृष्ठ सं.633 मोतीलाल बनारसीदास

[4] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.20 पृष्ठ सं.633 मोतीलाल बनारसीदास

[5] Mishra's Indian Ephemeris 2023, Dr. Suresh Chandra Mishra, Page no. 114

[6] गोचर विचार जगन्नाथ भसीन अ.1 पृष्ठ सं. 26, रंजन पब्लिकेशन्स

- धन के व्यवहार में सावधानी बरतें।
- यात्रा को यथासम्भव टालने का प्रयास करें।
- शत्रुओं से सचेत रहें।

## अशुभ फलों के निराकरण हेतु सर्वसामान्य उपाय का निर्देश किया जा रहा है –

- आवर्षान्त राहु, केतु तथा गुरु विशेष पूज्य हैं ।
- नित्य विष्णुसहस्रनामस्तोत्र का पाठ अथवा श्रवण करें ।[7]
- गुरुवार को फल, फूल तथा मिष्ठान का किसी धर्मस्थान में दान करें ।
- भाईयों के सहयोग व सेवा एवं बड़े बुजुर्गों की सेवा से सकल मनोरथ पूर्ण होंगे।
- माता-पिता एवं गुरुजनों का आशीर्वाद विशेष कल्याणदायक होगा।

---

[7] नित्यकर्म पूजाप्रकाश, श्रीलालबिहारी मिश्र, स्तुति प्रकरण, पृष्ठ सं. 322, गीताप्रेस गोरखपुर

# वृष राशि का वार्षिक फलादेश वर्ष 2023

- **ब्रजेश पाठक ज्यौतिषाचार्य**

(लब्धस्वर्णपदक)

वृष राशि वाले जातकों के लिए यह वर्ष मध्यम फलदायक है। हालाँकि इस वर्ष वृष राशि वाले जातकों के जीवन में अर्थार्जन के मार्ग प्रशस्त होंगे साथ ही विद्यार्थियों के विद्यार्जन में उपस्थित विघ्न-बाधायें दूर होंगी। दाम्पत्य सुख में वृद्धि होगी। विवाह के इच्छुक लोगों के जीवन साथी के अन्वेषण की दिशा में चल रहे प्रयास सफल होंगे तथा संतान से उत्तम सुख की प्राप्ति होगी। व्यापार में बाधा होगी लेकिन आजीविका के स्रोत बढ़ेंगे, उच्चाधिकारियों से सम्पर्क होगा, व्यवसाय में लाभ एवं न्यायालीय कार्यों में सफलता मिलेगी। स्वजनो से विवाद संभव है परन्तु भूमि-भवन वाहन की प्राप्ति की दिशा में चल रहे प्रयास सफल होंगे। स्वास्थ्य में बाधा तथा उदर विकार संभव है। अपने स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखें अन्यथा थोड़ी सी लापरवाही आपको चिकित्सालय तक पहुँचा सकती है। माता-पिता का स्वास्थ्य कुप्रभावित हो सकता है, इस विषय में विशेष ध्यान दें। इस वर्ष कई धार्मिक व माङ्गलिक कार्य होंगे। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आर्थिक प्रगति होगी तथा यश में वृद्धि होगी। आकस्मिक रुप से पारिवारिक सुख में बाधा पहुँचने से कष्ट होगा। सरकारी कर्मचारियों का स्थान परिवर्तन तथा पदोन्नति का योग है। सुरक्षा कर्मियों हेतु यह वर्ष कष्टकारी होगा। वर्ष के फरवरी, मार्च, जून, अक्टूबर मास कष्टदायी होंगे। इस वर्ष 17 जनवरी 2023 से शनि कुम्भ राशि में गोचर कर चुके हैं और वर्षपर्यन्त इसी राशि में रहेंगे। कुम्भ राशि वृष से दसवीं राशि है। फलदीपिका नामक ग्रन्थ में मन्त्रेश्वर ने जन्मराशि से दसवीं राशि में शनिगोचर का फल इस प्रकार कहा है –

**दुर्व्यापारप्रवित्तिं कलयति दशमे मानभङ्गं रुजं वा ।**[1]

अर्थात् – जब शनि जन्मराशि से दसवीं राशि में गोचर करता है तब जातक को ऐसे व्यापार में प्रवृत्त करता है जो उसके अनुकूल नहीं है और ऐसे व्यापार में प्रवृत्त होकर जातक कई तरह के नुकसान उठाता है अथवा कुछ परिस्थिति ऐसी उत्पन्न हो जाती है कि व्यक्ति गलत काम कर बैठता है और अपमान तथा नुकसान प्राप्त करता है। साथ ही दशमराशिगत शनि मानभंग कराता है और बहुत कष्टकारी रोग भी देता है।

गोचर विचार के दौरान शनि के बाद दूसरा सबसे महत्वपूर्ण ग्रह होता है बृहस्पति। क्योंकि शुभफलों की पुष्टता के लिए बृहस्पति को उत्तरदायी बताया गया है। इस वर्ष बृहस्पति मीन राशि में 21 अप्रैल 2023 तक और उसके बाद वर्षभर मेष राशि में रहेंगे।[2] यह दोनों राशियाँ क्रमशः वृष से ग्यारहवीं और बारहवीं है। मंत्रेश्वर ने फलदीपिका में जन्मराशि से बारहवीं राशि में बृहस्पति गोचर का अशुभफल तथा ग्यारहवीं राशि में बृहस्पति गोचर का शुभफल बताया है।

---

[1] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.23 पृष्ठ सं.635 मोतीलाल बनारसीदास

[2] श्रीजगन्नाथपञ्चाङ्गम् संवत् २०८०, प्रो.मदनमोहन पाठक, पृ.सं. 37

**लाभे पुत्रस्थानमानादिलाभो ।**[3]

अर्थात् – यदि बृहस्पति जन्मराशि से ग्यारहवीं राशि में गोचर करे तो पुत्र लाभ होता है, स्थानलाभ (नयी जगह जाना, नया पद मिलना आदि) होता है तथा सम्मान की वृद्धि होती है।

**रिःफे दुःखं साध्वसं द्रव्यहेतोः ।**[4]

अर्थात् – यदि बृहस्पति जन्मराशि से बारहवीं राशि में गोचर करे तो द्रव्य सम्बन्धी दुःख तथा भय, चिन्ता, उद्वेग आदि अशुभ फल होते हैं ।

इस प्रकार बृहस्पति के पक्ष से तो वृष राशि वालों के लिए वर्ष 2023 में शुभता की अधिकता ही पुष्ट हो रही है।

वार्षिक राशिफल विचार में आधुनिक ज्योतिर्विद् राहु को भी विशेष महत्व देते हैं। अतः राहु का विचार भी वृष राशि के वार्षिक राशिफल के सन्दर्भ में प्रस्तुत करते हैं। राहु इस वर्ष मेष एवं मीन राशियों में रहेंगे। अक्टूबर तक राहु की स्थिति मेष राशि में रहेगी उसके बाद नवम्बर में राहु राशि परिवर्तन करके मीन राशि में आएँगे।[5] यह दोनों राशियाँ क्रमशः वृष से बारहवीं और ग्यारहवीं है। मंत्रेश्वर ने फलदीपिका में जन्मराशि से बारहवीं राशि में राहु गोचर का अशुभफल तथा ग्यारहवीं राशि में राहु गोचर का शुभफल बताया है।[6] जन्म राशि से ग्यारहवीं राशि में स्थित राहु सौभाग्य तथा जन्मराशि से बारहवीं राशि में स्थित राहु व्यय प्रदान करता है।[7] गोचर विचार में जगन्नाथ भसीन ने राहु का चन्द्रलग्न से ग्यारहवें और बारहवें भाव में गोचर का फल बताते हुए लिखा है – "राहु चन्द्र लग्न से ग्यारहवें भाव में जब गोचरवश आता है तो शुभ कार्यों में प्रवृत्ति होती है दान पुण्यादि में रुचि बढ़ती है; परन्तु धन तथा भाग्य की हानि होती है। पुत्रों को कष्ट पहुँचता है। मित्रों से हानि होती है। राहु चन्द्र लग्न से द्वादश भाव में जब गोचरवश आता है तो व्यय अधिक होता है। सुख का नाश होता है। घर छोड़ दूर जाना पड़ता है, बन्धन (जेल की यात्रा या अपहरण) की भी संभावना रहती है। धन एवं पशु-सुख की हानि होती है।" इस प्रकार निष्कर्ष रुप में वार्षिक राशि फल को तीन भागों में बाँटे तो राहु एवं गुरु के कारण 50% शुभता और राहु एवं शनि के कारण 50% अशुभता रहेगी ।

## निष्कर्ष रुप में निम्नलिखित महत्वपूर्ण सावधानियाँ हैं –

- कार्यक्षेत्र को लेकर सचेत रहें ।
- मानभंग को लेकर सचेत रहें ।

---

[3] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.20 पृष्ठ सं.633 मोतीलाल बनारसीदास

[4] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.20 पृष्ठ सं.633 मोतीलाल बनारसीदास

[5] Mishra's Indian Ephemeris 2023, Dr. Suresh Chandra Mishra, Page no. 114

[6] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.2 पृष्ठ सं.621 मोतीलाल बनारसीदास

[7] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.24 पृष्ठ सं.637 मोतीलाल बनारसीदास

- व्ययाधिक्य को लेकर सावधान रहें ।
- स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें ।
- किसी से न उलझें सावधान रहें ।

**अशुभ फलों के निराकरण हेतु सर्वसामान्य उपाय का निर्देश किया जा रहा है –**

- गुरु व शनि विशेष पूज्य हैं।
- हनुमानचालीसा का नित्यपाठ करें ।
- प्रत्येक शनिवार को सुन्दरकाण्ड का पाठ करें ।
- रोगिजनों बूढ़े व अशक्तजनों की सेवा करने से सकल मनोरथ पूर्ण होंगे।
- सुनहला 6 से 8 रत्ती और लाजवर्त 12 रत्ती या उस से बड़ा धारण कर सकते हैं ।
- एकादशी का व्रत करें ।
- प्रतिदिन ॐ नमो भगवते वासुदेवाय मंत्र का 108 बार जप करें।

---

# मिथुन राशि का वार्षिक फलादेश वर्ष 2023

- **ब्रजेश पाठक ज्यौतिषाचार्य**

(लब्धस्वर्णपदक)

मिथुन राशि वाले जातकों के लिए यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं है। इस वर्ष सामान्य ही फल मिलेंगे। स्वास्थ्य में बाधा एवं अपव्यय से मानसिक तनाव होगा। नेत्रविकार से कष्ट संभव है। भूमि, सम्पत्ति, वाहन के क्रय-विक्रय से प्रगति होगी। कार्य क्षेत्र में अथक परिश्रम करना होगा। सहयोगियों से सामंजस्यता का अभाव रहेगा। स्त्री से वियोग व मतभेद संभव है। दाम्पत्य जीवन में सुख-शांति रहेगी। बच्चों की शिक्षा के सम्बन्ध में अथक परिश्रम करना होगा। राजनीतिक व्यक्तियों में भ्रम की स्थिति रहेगी तथा विपक्ष से हानि संभव है। वित्तसंस्थान के संचालको एवं विज्ञापनकर्मीयो को मंदी का सामना करना पड़ेगा। माता पिता की तीर्थ यात्रा का योग है। शत्रु प्रबल होगें । विद्यार्थीयो को कष्ट संभव है। वर्ष के जनवरी, मई, सितंबर और नवंबर मास कष्टदायी हैं। मिथुन राशि पर ग्रहों के प्रभाव के आधार पर विचार करें तो 1 जनवरी से 6 फरवरी तक वक्री बुध की स्वगृही दृष्टि रहने से पुरुषार्थ एवं उद्यम में वृद्धि, संघर्ष के बावजूद आय के साधन बनते रहेंगे। परन्तु 14 जनवरी तक सूर्य की दृष्टि तथा 17 जनवरी तक शनि की ढैय्या का प्रभाव रहने से क्रोध एवं उत्तेजना से बनते हुए कार्य बिगाड़ सकते हैं। 7 फरवरी से 27 फरवरी तक बुध अष्टमस्थ तथा 1 मार्च से 30 मार्च तक बुध अस्त रहने से स्वास्थ्य कष्ट, आय कम तथा खर्च अधिक होंगे। 16 मार्च से 30 मार्च तक बुध नीच (मीन) राशिस्थ होने से स्वास्थ्य हानि, अत्यधिक खर्च, तनाव एवं बनते कामों में अड़चनें पैदा करेगा। 1 अक्तूबर से 18 अक्तूबर तक बुध के जन्मराशि से चतुर्थ भाव में उच्चराशिस्थ होने से अचानक धन प्राप्ति के योग हैं। नवंबर में बुध के छठे स्थान में होने से सेहत में खराबी तथा चोटादि का भय होगा। इस वर्ष 17 जनवरी 2023 से शनि कुम्भ राशि में गोचर कर चुके हैं और वर्षपर्यन्त इसी राशि में रहेंगे। कुम्भ राशि मिथुन से नौवीं राशि है। शनि चन्द्र लग्न से नवें भाव में जब गोचरवश आता है तो दुःख, रोग और शत्रुओं की वृद्धि होती है। धर्म के कार्यों से मनुष्य पीछे हट जाता है अथवा धर्म परिवर्तन कर बैठता है । प्रादेशिक अथवा तीर्थ यात्राएं होती हैं, परन्तु लाभप्रद नहीं होतीं । भ्रातृ वर्ग व मित्रों से अनबन व कष्ट पाता है। आय में कमी आ जाती है। भृत्य वर्ग से भी परेशानी रहती है। बन्धन एवं आरोपों का भय रहता है। शनि के मिथुन राशि से नवमस्थ होने से कार्य व्यवसाय एवं भाग्योन्नति में अड़चनें आएँगी, स्वास्थ्य सम्बन्धी कष्ट होंगे तथा परिस्थितियाँ विपरीत रहेंगी। पारिवारिक मतभेद रहेंगे। इस राशि पर शनि का पाया सुवर्ण होने से भी निकट बन्धुओं से मतभेद पैदा होंगे। जुलाई के बाद से कुछ रुके हुए कार्यों में सफलता मिलेगी। फलदीपिका नामक ग्रन्थ में मन्त्रेश्वर ने जन्मराशि से नौवीं राशि में शनिगोचर का फल इस प्रकार कहा है –

**दारिद्र्यं धर्मविघ्नं पितृसमविलयं नित्यदुःखं शुभस्थे**[1]

---

[1] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.23 पृष्ठ सं.635 मोतीलाल बनारसीदास

अर्थात् – जब शनि गोचरवश चन्द्रराशि से नौवीं राशि में आता है तो दरिद्रता कारक होता है। धर्म कार्य में विघ्न उपस्थित होते हैं। पिता के सामान आदरणीय (गुरु, चाचा, मामा आदि) किसी व्यक्ति की मृत्यु होती है। नित्य दुःख प्राप्त होता रहता है।

गोचर विचार के दौरान शनि के बाद दूसरा सबसे महत्वपूर्ण ग्रह होता है बृहस्पति। क्योंकि शुभफलों की पुष्टता के लिए बृहस्पति को उत्तरदायी बताया गया है। इस वर्ष बृहस्पति मीन राशि में 21 अप्रैल 2023 तक और उसके बाद वर्षभर मेष राशि में रहेंगे।[2] यह दोनों राशियाँ क्रमशः मिथुन से दसवीं और ग्यारहवीं है। चन्द्र लग्न से दशम भाव में बृहस्पति जब गोचरवश आता है तो दीनता होती है, मानहानि तक की सम्भावना रहती है तथा अन्न धन की भी हानि होती है। इसलिए अप्रैल 2023 तक का गुरु गोचर शुभ नहीं है। 22 अप्रैल से गुरु मेष राशि में रहेंगे, इसका श्रेष्ठ फल मिलेगा। बृहस्पति चन्द्र लग्न से ग्यारहवें भाव में जब गोचरवश आता है तो धन और प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है। शत्रु पराजित होते हैं और समस्त कार्यों में सफलता मिलती है। विवाह तथा पुत्र जन्म का अवसर प्राप्त होता है। नौकरी में पदोन्नति और व्यापार में अवश्य ही वृद्धि होती है। उत्तम सुख की प्राप्ति होती है। वैभव विलास की वस्तुएं प्राप्त होती हैं। पुत्रों से तथा राज्याधिकारियों से सुख मिलता है। शुभ कार्यों में रुचि होती है तथा रति सुख में वृद्धि होती है। मंत्रेश्वर ने फलदीपिका में जन्मराशि से दसवीं राशि में बृहस्पति गोचर का अशुभफल तथा ग्यारहवीं राशि में बृहस्पति गोचर का शुभफल बताया है।

**कर्मण्यर्थस्थानपुत्रादिपीडा** [3]

अर्थात् - बृहस्पति यदि जन्मराशि से दसवीं राशि में गोचर करे तो कार्यक्षेत्र में धन संबंधी या स्थान संबंधी (तबादला, पदहानि, सम्मानहानि) परेशानियाँ होती हैं। साथ ही संतान को या संतान से कष्ट प्राप्त होता है।

**लाभे पुत्रस्थानमानादिलाभो ।**[4]

अर्थात् - यदि बृहस्पति जन्मराशि से लाभ भाव में गोचर करे तो पुत्रलाभ, पद या स्थान का लाभ, सम्मान या पुरस्कार की प्राप्ति आदि लाभ मिलते हैं।

इस प्रकार बृहस्पति के पक्ष से तो मिथुन राशि वालों के लिए वर्ष 2023 में शुभता की अधिकता ही पुष्ट हो रही है।

वार्षिक राशिफल विचार में आधुनिक ज्योतिर्विद् राहु को भी विशेष महत्व देते हैं। अतः राहु का विचार भी मिथुन राशि के वार्षिक राशिफल के सन्दर्भ में प्रस्तुत करते हैं। राहु इस वर्ष मेष एवं मीन राशियों में रहेंगे। अक्टूबर तक राहु की

---

[2] श्रीजगन्नाथपञ्चाङ्गम् संवत् २०८०, प्रो.मदनमोहन पाठक, पृ.सं. 37

[3] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.20 पृष्ठ सं.633 मोतीलाल बनारसीदास

[4] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.20 पृष्ठ सं.633 मोतीलाल बनारसीदास

स्थिति मेष राशि में रहेगी उसके बाद नवम्बर में राहु राशि परिवर्तन करके मीन राशि में आएँगे।[5] यह दोनों राशियाँ क्रमशः मिथुन से ग्यारहवीं और दसवीं है। मंत्रेश्वर ने फलदीपिका में जन्मराशि से ग्यारहवीं तथा दसवीं दोनों ही राशियों में राहु गोचर का शुभफल बताया है।[6] जन्म राशि से ग्यारहवीं राशि में स्थित राहु सौभाग्य तथा जन्मराशि से दसवीं राशि में स्थित राहु लाभ प्रदान करता है।[7] गोचर विचार में जगन्नाथ भसीन ने राहु का चन्द्रलग्न से ग्यारहवें और दसवें भाव में गोचर का फल बताते हुए लिखा है – *राहु चन्द्र लग्न से ग्यारहवें भाव में जब गोचरवश आता है तो शुभ कार्यों में प्रवृत्ति होती है। दान-पुण्यादि में रुचि बढ़ती है; परन्तु धन तथा भाग्य की हानि होती है। पुत्रों को कष्ट पहुँचता है। मित्रों से हानि होती है। राहु चन्द्र लग्न से दशम भाव में जब गोचरवश जाता है तो गंगादि तीर्थों में स्नान का अवसर आता है। दान-पुण्य करने को जी चाहता है। मान में अकस्मात् वृद्धि होती है। कार्य सफल होते हैं। परन्तु शत्रु भी उत्पन्न हो जाते हैं।*

इस प्रकार निष्कर्ष रुप में वार्षिक राशि फल को तीन भागों में बाँटे तो राहु एवं गुरु के कारण 60% शुभता और शनि के कारण 40% अशुभता रहेगी ।

## निष्कर्ष रुप में निम्नलिखित महत्वपूर्ण सावधानियाँ हैं –

- मानसिक अशान्ति रहेगी ।
- धर्म से मन भटकेगा दृढ़तापूर्वक मन को धर्म में जोड़े रखें ।
- किसी ज्येष्ठ या आदरणीय रिश्तेदार की मृत्यु संभावित है ।
- दुःख, रोग एवं शत्रुओं की वृद्धि होगी ।
- रोजमर्रा के कार्यों में भी कुछ-कुछ विघ्न उपस्थित होंगे ।

## अशुभ फलों के निराकरण हेतु सर्वसामान्य उपाय का निर्देश किया जा रहा है –

- गुरु व शनि विशेष पूज्य हैं।
- हनुमानचालीसा तथा सुन्दरकाण्ड रामायण पाठ से विघ्न दूर होंगें ।
- रोगियों, बूढ़े तथा अशक्तजनों की सेवा करने से सकल मनोरथ पूर्ण होंगे।
- नित्य विष्णुसहस्रनाम का पाठ करें।
- सुनहला रत्न 6 कैरट या उस से अधिक वजन का धारण करें।
- एकादशी का व्रत करें ।

---

[5] Mishra's Indian Ephemeris 2023, Dr. Suresh Chandra Mishra, Page no. 114

[6] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.2 पृष्ठ सं.621 मोतीलाल बनारसीदास

[7] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.24 पृष्ठ सं.637 मोतीलाल बनारसीदास

# कर्क राशि का वार्षिक फलादेश वर्ष 2023

- **ब्रजेश पाठक ज्यौतिषाचार्य**

(लब्धस्वर्णपदक)

यह वर्ष आपके लिए मध्यम फलदायक है। विवाहार्थियों को मनोनुकूल फल की प्राप्ति में विघ्न बाधायें उपस्थित होंगी। सहोदर भाई बहनों का स्वास्थ्य तथा व्यवहार कुप्रभावित होगा। भूमि भवन वाहन सुख प्राप्ति के सामान्य योग हैं। प्रतियोगिता परीक्षा में लगे परीक्षार्थियों को विशेष सफलता की प्राप्ति होगी। सुसङ्गति के प्रभाव से विशेष सफलता प्राप्त होगी। ऋण- रिपु-रोगों से मुक्ति मिलेगी। आर्थिक संकट का सामना करना पड़ सकता है। अपव्यय से चित्त अशान्त रहेगा। स्वास्थ्य संबंधी कष्ट होगा, अनिद्रा तथा दुश्चिंतायें आपके स्वास्थ्य को प्रतिकूल कर सकती हैं। कुटुम्बीजन असंतुष्ट रहेंगे, स्वजनों तथा मित्रों से वियोग तथा कुटुम्बीय कलह होगा। अपने वाग् व्यवहार तथा खाद्य पेय पर विशेष ध्यान देन होगा। शनि की ढैया के कारण शत्रु प्रबल होगें तथा कार्यों में अवरोध होगा। सन्तान के प्रति चिन्ता होगी। यात्रा में कष्ट एवं हानि का योग है। राजकीय दंड का भय व कानूनी कार्यों में असफलता प्राप्त होगी। वित्त संबंधी लेन देन के कार्यों में विवाद तथा मानसिक कष्ट होगा। भूमि सम्पति का विवाद तथा मानसिक उद्वेग बढ़ेगा। नौकरी में स्थानान्तरण संभव है। गृहिणियों पर मानसिक दबाव होगा। वर्ष 2023 के अप्रैल, अगस्त, अक्टूबर,
दिसम्बर मास नेष्ट हैं।

गोचर विचार में सबसे महत्वपूर्ण होता है शनि का विचार करना। इस वर्ष 17 जनवरी 2023 से शनि कुम्भ राशि में गोचर कर चुके हैं और वर्षपर्यन्त इसी राशि में रहेंगे। कुम्भ राशि कर्क से आठवीं राशि है। फलदीपिका नामक ग्रन्थ में मन्त्रेश्वर ने जन्मराशि से आठवीं राशि में शनिगोचर का फल इस प्रकार कहा है –

**स्वसुतपशुसुहृद्वित्तनाशमायाति जन्मादेरष्टमान्तं दिशति पदवशेनार्कसूनुः क्रमेण ॥**[1]

अर्थात् - जन्मकालीन चन्द्र राशि से शनि गोचरवश अष्टम भाव में हो तो पूर्ण अशुभ फल देता है। संतान नाश या संतान कष्ट होता है। पशु, मित्र, धन आदि के कारण घोर पीड़ा होती है। इष्ट मित्र से वियोग होता है, पशुधन की विशेष हानि होती है। मनुष्य को स्वास्थ सम्बन्धी भी चिन्ता उपस्थित होती रहती है। किसी पीड़ाकारक रोग के कारण विशेष शरीर कष्ट होता है।

गोचर विचार के दौरान शनि के बाद दूसरा सबसे महत्वपूर्ण ग्रह होता है बृहस्पति। क्योंकि शुभफलों की पुष्टता के लिए बृहस्पति को उत्तरदायी बताया गया है। इस वर्ष बृहस्पति मीन राशि में 21 अप्रैल 2023 तक और उसके बाद वर्षभर

---

[1] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.22 पृष्ठ सं.635 मोतीलाल बनारसीदास

मेष राशि में रहेंगे।[2] यह दोनों राशियाँ क्रमशः कर्क से नवमी और दशमी है। मंत्रेश्वर ने फलदीपिका में जन्मराशि से नवमी राशि में बृहस्पति गोचर का शुभफल और दशमी राशि में बृहस्पति गोचर का अशुभफल बताया है।

**भाग्ये जीवे सर्वसौभाग्यसिद्धिः ॥**[3]

अर्थात् - यदि बृहस्पति जन्मराशि से नवम में गोचर करे तो सर्वसौभाग्य सिद्धि, भाग्योदय, कार्य में सफलता आदि शुभ फल प्राप्त होते हैं।

**कर्मण्यर्थस्थानपुत्रादिपीडा ॥**[4]

अर्थात् - यदि बृहस्पति जन्मराशि से दशम में गोचर करे तो कर्मस्थान में धन या पद का कष्ट जैसे - नौकरी या ओहदे में कमी या सम्मान में कोई हानि आदि फल होते हैं। साथ ही संतान पीडा आदि अशुभ फल मिलते हैं।

इस प्रकार बृहस्पति के पक्ष से तो कर्क राशि वालों के लिए वर्ष 2023 में मिश्रित फलों की पुष्टता हो रही है।

वार्षिक राशिफल विचार में आधुनिक ज्योतिर्विद् राहु को भी विशेष महत्व देते हैं। अतः राहु का विचार भी कर्क राशि के वार्षिक राशिफल के सन्दर्भ में प्रस्तुत करते हैं। राहु इस वर्ष मेष एवं मीन राशियों में रहेंगे। अक्टूबर तक राहु की स्थिति मेष राशि में रहेगी उसके बाद नवम्बर में राहु राशि परिवर्तन करके मीन राशि में आएँगे।[5] मेष राशि कर्क से चतुर्थ तथा मीन राशि कर्क से पञ्चम है, गोचर विचार ग्रन्थ में जगन्नाथ भसीन जी ने यवानाचार्य का मत **हिमगोः पूजमसादेर्धनम्** का कटपयादि विधि से अर्थ करते हुए राहु के चतुर्थ भाव में गोचर को अशुभफल प्रदाता तथा पञ्चम भाव में गोचर को शुभफल प्रदाता बताया है। गोचर विचार में जगन्नाथ भसीन ने राहु का चन्द्रलग्न से चतुर्थ भाव में गोचर का फल बताते हुए लिखा है – "राहु चन्द्र लग्न से चतुर्थ भाव में जब गोचरवश आता है तो सुख का नाश करता है। राज्य के विरुद्ध विद्रोह की भावना होती है। पैतृक स्थान से दूर ले जाता है। सम्बन्धियों से कोई सहायता नहीं मिलती। सुख में कमी करता है।"[6] साथ ही उन्होंने राहु का चन्द्रलग्न से पञ्चम भाव में गोचर का फल बताते हुए लिखा है – "राहु चन्द्र लग्न से पंचम भाव में जब गोचरवश आता है तो धन ऐश्वर्य में अचानक वृद्धि करता है। सट्टे आदि से लाभ करवाता है। भाग्य तथा आय में भी वृद्धि करता है, परन्तु इसकी चन्द्र पर नवम दृष्टि के कारण मानसिक व्यथा भी हो।"[7]

---

[2] श्रीजगन्नाथपञ्चाङ्गम् संवत् २०८०, प्रो.मदनमोहन पाठक, पृ.सं. 37

[3] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.20 पृष्ठ सं.633 मोतीलाल बनारसीदास

[4] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.20 पृष्ठ सं.633 मोतीलाल बनारसीदास

[5] Mishra’s Indian Ephemeris 2023, Dr. Suresh Chandra Mishra, Page no. 114

[6] गोचर विचार जगन्नाथ भसीन अ.1 पृष्ठ सं. 27, रंजन पब्लिकेशन्स

[7] गोचर विचार जगन्नाथ भसीन अ.1 पृष्ठ सं. 27, रंजन पब्लिकेशन्स

इस प्रकार निष्कर्ष रुप में वार्षिक राशि फल को तीन भागों में बाँटे तो राहु, शनि एवं गुरु के कारण 70% अशुभता और राहु एवं गुरु के कारण 30% शुभता रहेगी।

## निष्कर्ष रुप में निम्नलिखित महत्वपूर्ण सावधानियाँ हैं -

- आर्थिक संकट का सामना करना पड़ सकता है।
- अनिद्रा तथा दुश्चिंतायें आपके स्वास्थ्य को प्रतिकूल कर सकती हैं।
- सन्तान के प्रति चिन्ता होगी।
- भूमि सम्पति का विवाद तथा मानसिक उद्वेग बढ़ेगा।
- राजकीय दंड का भय व कानूनी कार्यों में असफलता प्राप्त होगी।
- यात्रा में कष्ट एवं हानि का योग है।
- धैर्य के साथ इस बुरे समय के व्यतीत होने की प्रतीक्षा करें आगे जीवन में कई शुभ फलों की प्राप्ति होनी है।

## अशुभ फलों के निराकरण हेतु सर्वसामान्य उपाय का निर्देश किया जा रहा है –

- शनि, गुरु तथा केतु विशेष पूज्य हैं अतः इन ग्रहों के मन्त्रजप कराएँ।
- प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर शनिदशनाम का पाठ करें।[8]
- प्रतिदिन स्नान के बाद दशरथकृत शनि स्तोत्र का पाठ करें।[9]
- शनिवार को शनि दीपदान करें।[10]
- शनिवार को अश्वत्थस्तोत्र[11] का पाठ करते हुए पीपल वृक्ष की 108 परिक्रमा करें।
- प्रत्येक शनिवार सुन्दरकाण्ड का पाठ अवश्य करें ।
- नियमित विष्णुसहस्रनामस्तोत्र का नित्य पाठ करने से सकल मनोकामना पूर्ण होगी।
- वृद्धजनों की सेवा करें ।

---

[8] कोणस्थ पिङ्गलो बभ्रुः कृष्णः रौद्रान्तको यमः, शौरी शनिश्चरो मन्दः पिप्पलाश्रयः संस्तुतः।
एतानि दश नामानि प्रातरुत्थाय यो पठेत् शनिश्चरो कृता पीड़ा न कदाचित् भविष्यति।।

[9] https://www.bhaktibharat.com/mantra/dashratha-shani-sotra

[10] https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=579770947498176&id=100063958274060&mibextid=Nif5oz

[11] नित्यकर्म पूजाप्रकाश, श्रीलालबिहारी मिश्र, स्तुति प्रकरण, पृष्ठ सं. 336, गीताप्रेस गोरखपुर

# सिंह राशि का वार्षिक फलादेश वर्ष 2023

- **ब्रजेश पाठक ज्यौतिषाचार्य**

(लब्धस्वर्णपदक)

यह वर्ष मध्यम फलदायक है। विद्यार्थियों को अपने विद्यार्जन के क्षेत्र में विशेष विघ्न बाधायें उपस्थित होगी। आजीविका प्राप्ति की दिशा में चल रहे प्रयास सफल होंगे लेकिन अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में संघर्ष होगा। सहोदर भाई-बहनों के सहयोग एवं सद्व्यवहार से आपको सुख प्राप्त होगा। कार्यस्थल के सहयोगियों से मतभेद सम्भव है। जीवनसाथी के अन्वेषण में चल रहे प्रयास सफल होंगे। विवाहित लोगों के दाम्पत्य जीवन में सुख सहयोग रहेगा। भूमि-भवन वाहन प्राप्ति की दिशा में चल रहे प्रयासों में अवरोध उपस्थित होगा। यह वर्ष आर्थिक उन्नति वाला रहेगा परन्तु वित्तिय व्यय पर कडा प्रबंधन आवश्यक है, आकस्मिक व्यय होगा। ध्यान रहे शेयर बाजार, द्यूतक्रीडा एवं सट्टेबाजी आदि हेतु आपके लिए यह वर्ष उचित नही है, अतिशीघ्रता में लिया गया निर्णय हानिकारक होगा। नौकरी पेशा हेतु यह वर्ष उत्तम रहेगा। धर्मार्जन तथा भाग्योदय में अनुकूल सफलता की प्राप्ति होगी तथा सामाजिक कार्य में अभिरुचि होगी। माता-पिता के स्वास्थ्य में बाधा होगी। मुख्यतः जीवन साथी तथा माताजी का स्वास्थ्य एवं व्यवहार आपको व्यथित कर सकता है। आलस्य व प्रमाद का सर्वथा परित्याग कर विकास पथ पर अग्रसर होवें। अपने स्वास्थ्य का पूर्ण ध्यान रखें। आपका स्वास्थ्य तो उत्तम रहेगा परन्तु दुर्घटना तथा चोट-चपेट की संभावना है। ध्यान रहे यदि आपको पहले से कोई अस्थिरोग, जठररोग अथवा नेत्र सम्बन्धित रोग है तो उसके विकारों में वृद्धि से कष्ट होगा। इस वर्ष किसी स्त्री का वियोग संभव है। आपके लिए वर्ष 2023 के मार्च, जुलाई, सितम्बर और नवम्बर महीने कष्टकारी सिद्ध होंगे। सिंह राशि वालों पर इस वर्ष साढ़ेसाती या ढैया का कोई प्रभाव नहीं है।

गोचर विचार में सबसे महत्वपूर्ण होता है शनि का विचार करना। इस वर्ष 17 जनवरी 2023 से शनि कुम्भ राशि में गोचर कर चुके हैं और वर्षपर्यन्त इसी राशि में रहेंगे। कुम्भ राशि सिंह से सातवीं राशि है। फलदीपिका नामक ग्रन्थ में मन्त्रेश्वर ने जन्मराशि से सातवीं राशि में शनिगोचर का फल इस प्रकार कहा है –

**स्त्रीरोगाध्वावभीतिं**[1] अर्थात् - स्त्री के रोग से या स्त्रीप्रेम के कारण भय होता है।

गोचर विचार के दौरान शनि के बाद दूसरा सबसे महत्वपूर्ण ग्रह होता है बृहस्पति। क्योंकि शुभफलों की पुष्टता के लिए बृहस्पति को उत्तरदायी बताया गया है। इस वर्ष बृहस्पति मीन राशि में 21 अप्रैल 2023 तक और उसके बाद वर्षभर

---

[1] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.22 पृष्ठ सं.635 मोतीलाल बनारसीदास

मेष राशि में रहेंगे।[2] यह दोनों राशियाँ क्रमशः सिंह से आठवीं और नवीं हैं। मंत्रेश्वर ने फलदीपिका में जन्मराशि से आठवीं राशि में बृहस्पति गोचर का अशुभफल और नवीं राशि में बृहस्पति गोचर का शुभफल बताया है।

**मार्गक्लेशमरिष्टमष्टमगते नष्टं धनैः कष्टताम् ॥**[3]

अर्थात् - बृहस्पति जन्मराशि से आठवीं राशि में गोचर करे तो मार्गक्लेश, व्यर्थ यात्रा से परिश्रम, धन नाश, विविध प्रकार के कष्ट आदि अशुभफल प्राप्त होते हैं।

**भाग्ये जीवे सर्वसौभाग्यसिद्धिः ॥**[4]

अर्थात् - बृहस्पति जन्मराशि से नवीं राशि में गोचर करे तो सर्वसौभाग्य सिद्धि, भाग्योदय, कार्य में सफलता आदि शुभफल प्राप्त होते हैं।

इस प्रकार बृहस्पति के पक्ष से तो मेष राशि वालों के लिए वर्ष 2023 में शुभता की अधिकता ही पुष्ट हो रही है।

वार्षिक राशिफल विचार में आधुनिक ज्योतिर्विद् राहु को भी विशेष महत्व देते हैं। अतः राहु का विचार भी सिंह राशि के वार्षिक राशिफल के सन्दर्भ में प्रस्तुत करते हैं। राहु इस वर्ष मेष एवं मीन राशियों में रहेंगे। अक्टूबर तक राहु की स्थिति मेष राशि में रहेगी उसके बाद नवम्बर में राहु राशि परिवर्तन करके मीन राशि में आएँगे।[5] मेष राशि सिंह से नवम है, गोचर विचार ग्रन्थ में जगन्नाथ भसीन जी ने यवानाचार्य का मत **हिमगोः पूजमसादेर्धनम्** का कद्दयादि विधि से अर्थ करते हुए जन्मराशि से नवम भाव में गोचर राहु को शुभफल प्रदाता बताया है। गोचर विचार में जगन्नाथ भसीन ने राहु का चन्द्रलग्न से नवम भाव में गोचर का फल बताते हुए लिखा है – "राहु चन्द्र लग्न से नवम भाव में जब गोचरवश आता है तो अकस्मात् आशातीत लाभ होता है जो प्रायः चिरस्थायी होता है। राज्य की ओर से कृपा रहती है। मित्रों से सहायता प्राप्त होती है । परन्तु चन्द्र लग्न पर राहु की दृष्टि के कारण मानसिक व्यथा भी होती है।"[6] मीन राशि सिंह से अष्टम है, गोचर विचार में जगन्नाथ भसीन ने राहु का चन्द्रलग्न से अष्टम भाव में गोचर का फल बताते हुए लिखा है – "राहु चन्द्र लग्न से आठवें भाव में जब गोचरवश आता है तो अकस्मात् धन की वृद्धि होती है परन्तु विदेश यात्रा और भयंकर रोगों की भी संभावना रहती है।"

प्रकार निष्कर्ष रुप में वार्षिक राशि फल को तीन भागों में बाँटे तो राहु एवं गुरु के कारण 60% शुभता और राहु एवं शनि के कारण 40% शुभता रहेगी। मुख्यरूप से गुरु एवं राहु के कारण मई से नवम्बर तक का समय बहुत शुभ है।

---

[2] श्रीजगन्नाथपञ्चाङ्गम् संवत् २०८०, प्रो.मदनमोहन पाठक, पृ.सं. 37

[3] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.19, पृष्ठ सं.633 मोतीलाल बनारसीदास

[4] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.20, पृष्ठ सं.633 मोतीलाल बनारसीदास

[5] Mishra’s Indian Ephemeris 2023, Dr. Suresh Chandra Mishra, Page no. 114

[6] गोचर विचार जगन्नाथ भसीन अ.1 पृष्ठ सं. 27, रंजन पब्लिकेशन्स

**निष्कर्ष रुप में निम्नलिखित महत्वपूर्ण सावधानियाँ हैं -**

- पत्नी के स्वास्थ्य को लेकर सचेत रहें।
- किसी स्त्री के प्रेम के चक्कर न पड़ें वो मात्र के झांसा है।
- रोगों को लेकर बहुत सचेत रहें, बुरी तरह स्वास्थ्य हानि हो सकती है।
- शेयर बाजार, द्यूतक्रीड़ा एवं सट्टेबाजी आदि हेतु आपके लिए यह वर्ष उचित नही है, अतिशीघ्रता में लिया गया निर्णय हानिकारक होगा।
- कार्यस्थल के सहयोगियों से मतभेद सम्भव है।
- वित्तिय व्यय पर कड़ा प्रबंधन आवश्यक है, आकस्मिक व्यय होगा।
- यात्रा के दौरान सावधानी बरतें कुछ अनहोनी संभावित है ।

**अशुभ फलों के निराकरण हेतु सर्वसामान्य उपाय का निर्देश किया जा रहा है –**

- प्रतिकूलताओं की निवृत्ति के लिए पीपल का वृक्ष लगावें।
- गुरुजनों, पूज्यजनों तथा बड़े भाई की नित्य सेवा करें एवं उनसे आशीर्वाद ग्रहण करें।
- विष्णुसहस्रनामस्तोत्र का नित्य पाठ करने से सकल बाधायें दूर होंगी।
- आवर्षान्त राहु तथा शनि विशेष पूज्य हैं ।
- हनुमान जी की नित्य आराधना उनके स्तोत्रों का पाठ बहुत लाभप्रद सिद्ध होगा ।
- प्रत्येक शनिवार सुन्दरकाण्ड का पाठ अवश्य करें ।
- माता-पिता एवं गुरुजनों का आशीर्वाद विशेष कल्याणदायक होगा।

---

# कन्या राशि का वार्षिक फलादेश वर्ष 2023

- **ब्रजेश पाठक ज्यौतिषाचार्य**

(लब्धस्वर्णपदक)

यह वर्ष आपके लिए मध्यमोत्तम फलदायक है। वाहन, भूमि सम्पत्ति के क्रय विक्रय का उत्तम योग है। भूमि-भवन वाहन सुख में उपस्थित बाधायें दूर होंगी लेकिन अन्य कार्यों में बाधा अथवा विलम्ब होगा। अपने क्रोध पर पूर्ण नियन्त्रण रखें अन्यथा रक्तचाप एवं अनिद्रा जैसी समस्याएं उपस्थित होंगी साथ ही अपने स्वजन विमुख होंगे। चर्म विकार जैसी समस्यायें आपको व्यथित कर सकती हैं। दाम्पत्य सुख में अवरोध उपस्थित होगा। विवाहार्थियों को भी जीवनसाथी के चयन में अत्यधिक विघ्न वाधाओं का सामना करना पडेगा। विद्यार्थीयो एवं परीक्षार्थीयो हेतु वर्ष कष्टकारी है, प्रतियोगियों को सफलता प्राप्ति हेतु विशेष प्रयास करने होंगे। आकस्मिक चोट चपेट अथवा गुप्तरोग का आक्रमण झेलना पड़ सकता है। कुटुम्बी जनों का सहयोग प्राप्त होगा। व्यवसाय में बाधा संभव है, व्यर्थ विवाद या अशांति रहेगी। संविदाकर्मियों तथा सूचना केन्द्र के कर्मचारियों पर मानसिक दबाव रहेगा। आर्थिक क्षेत्र में किये गये सुधारात्मक प्रयासों से सफलता मिलेगी। बौद्धिक प्रगति, मान-सम्मान तथा आकस्मिक धनलाभ संभव है फिर भी उचित फल की प्राप्ति नहीं होगी। वर्ष 2023 के फरवरी, जून, जुलाई, अगस्त तथा अक्टूबर मास नेष्ट हैं। अशुभ ग्रहों के उपाय करने से आपका सर्वविध उत्कर्ष होगा।

गोचर विचार में सबसे महत्वपूर्ण होता है शनि का विचार करना। इस वर्ष 17 जनवरी 2023 से शनि कुम्भ राशि में गोचर कर चुके हैं और वर्षपर्यन्त इसी राशि में रहेंगे। कुम्भ राशि कन्या से छठी राशि है। फलदीपिका नामक ग्रन्थ में मन्त्रेश्वर ने जन्मराशि से छठी राशि में शनिगोचर का फल **सर्वसौख्यम्** [1] कहा है। अर्थात् जन्म राशि से गोचर का शनि छठे भाव में हो तो शुभ फल देता है। उस दौरान जातक को सब प्रकार का सुख प्राप्त होता है।

गोचर विचार के दौरान शनि के बाद दूसरा सबसे महत्वपूर्ण ग्रह होता है बृहस्पति। क्योंकि शुभफलों की पुष्टता के लिए बृहस्पति को उत्तरदायी बताया गया है। इस वर्ष बृहस्पति मीन राशि में 21 अप्रैल 2023 तक और उसके बाद वर्षभर मेष राशि में रहेंगे।[2] यह दोनों राशियाँ क्रमशः कन्या से सातवीं और आठवीं है। मंत्रेश्वर ने फलदीपिका में जन्मराशि से सातवीं राशि में बृहस्पति गोचर का शुभफल और आठवीं राशि में बृहस्पति गोचर का अशुभफल बताया है।

**यात्रा शोभनहेतवे वनितया सौख्यं सुताप्ति स्मरे ॥**[3]

अर्थात् - यदि बृहस्पति जन्मराशि से सातवीं राशि में गोचर करे तो किसी शुभ कार्य से यात्रा, अपनी स्त्री से सुख तथा पुत्र प्राप्ति आदि शुभफल प्राप्त होते हैं।

---

[1] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.22 पृष्ठ सं.635 मोतीलाल बनारसीदास

[2] श्रीजगन्नाथपञ्चाङ्गम् संवत् २०८०, प्रो.मदनमोहन पाठक, पृ.सं. 37

[3] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.19 पृष्ठ सं.633 मोतीलाल बनारसीदास

**मार्गक्लेशमरिष्टमष्टमगते नष्टं धनैः कष्टताम् ॥**[4]

अर्थात् - यदि बृहस्पति जन्मराशि से आठवीं राशि में गोचर करे तो मार्गक्लेश, व्यर्थ यात्रा से परिश्रम, धननाश, विविध प्रकार के कष्ट आदि अशुभफल प्राप्त होते हैं।

इस प्रकार बृहस्पति के पक्ष से तो मेष राशि वालों के लिए वर्ष 2023 में मिश्रित की ही पुष्टता हो रही है।

वार्षिक राशिफल विचार में आधुनिक ज्योतिर्विद् राहु को भी विशेष महत्व देते हैं। अतः राहु का विचार भी कन्या राशि के वार्षिक राशिफल के सन्दर्भ में प्रस्तुत करते हैं। राहु इस वर्ष मेष एवं मीन राशियों में रहेंगे। अक्टूबर तक राहु की स्थिति मेष राशि में रहेगी उसके बाद नवम्बर में राहु राशि परिवर्तन करके मीन राशि में आएँगे।[5] मेष राशि कन्या से आठवीं है तथा मीन राशि सातवीं है। गोचर विचार ग्रन्थ में जगन्नाथ भसीन जी ने यवानाचार्य का मत **हिमगोः पूजमसादेर्धनम्** का कद्दयादि विधि से अर्थ करते हुए राहु के आठवें भाव में गोचर करना भी शुभफल प्रदाता तथा सप्तम भाव के गोचरगत राहु को भी शुभफल प्रदाता ही बताया है। गोचर विचार में जगन्नाथ भसीन ने राहु का चन्द्रलग्न से अष्टम भाव में गोचर का फल बताते हुए लिखा है –

*राहु चन्द्र लग्न से आठवें भाव में जब गोचरवश आता है तो अकस्मात् धन की वृद्धि होती है परन्तु विदेश यात्रा और भयंकर रोगों की भी संभावना रहती है।*

गोचर विचार में जगन्नाथ भसीन ने राहु का चन्द्रलग्न से सप्तम भाव में गोचर का फल बताते हुए लिखा है –

*राहु चन्द्र लग्न से सप्तम भाव में जब गोचरवश आता है तो अचानक व्यापार में वृद्धि करता है। यात्रादि से धन लाभ होता है। राज्य की ओर से कृपा रहती है, मित्रों से सहायता मिलती है। शरीर में पित्त अथवा वायु दोष के कारण साधारण कष्ट होता है, मन में क्लेश रहता है।*

इस प्रकार निष्कर्ष रुप में वार्षिक राशि फल को तीन भागों में बाँटे तो राहु, शनि एवं गुरु के कारण 70% शुभता और गुरु के कारण 30% अशुभता रहेगी ।

## निष्कर्ष रुप में निम्नलिखित महत्वपूर्ण सावधानियाँ हैं -

- अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना होगा।
- अपने क्रोध पर पूर्ण नियन्त्रण रखें अन्यथा रक्तचाप एवं अनिद्रा जैसी समस्याएं उपस्थित होंगी।
- चर्म विकार जैसी समस्यायें आपको व्यथित कर सकती हैं।

---

[4] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.19 पृष्ठ सं.633 मोतीलाल बनारसीदास

[5] Mishra's Indian Ephemeris 2023, Dr. Suresh Chandra Mishra, Page no. 114

- दाम्पत्य सुख में अवरोध उपस्थित होगा।
- प्रतियोगियों को सफलता प्राप्ति हेतु विशेष प्रयास करने होंगे।
- आकस्मिक चोट चपेट अथवा गुप्तरोग का आक्रमण झेलना पड सकता है।
- व्यवसाय में बाधा संभव है, व्यर्थ विवाद या अशांति रहेगी।

**अशुभ फलों के निराकरण हेतु सर्वसामान्य उपाय का निर्देश किया जा रहा है –**

- अनुकूलता हेतु पीपलवृक्ष लगावें ।
- गणपतिस्तोत्र का पाठ करें ।
- शनि-राहु-केतु का मन्त्रजप कराएँ ।
- विशेष अनुकूलता प्राप्ति हेतु माता-पिता सहित गुरुजनों का नित्य आशीर्वाद लेते रहें।
- प्रत्येक गुरुवार बृहस्पति के दानपदार्थों का दान करें।
- प्रतिदिन ॐ नमो भगवते वासुदेवाय मंत्र का 108 बार जप करें।

---

# तुला राशि का वार्षिक फलादेश वर्ष 2023

- **ब्रजेश पाठक ज्यौतिषाचार्य**

(लब्धस्वर्णपदक)

तुला तुलाराशि जातको हेतु वर्ष अधिकांश रुप से सकारात्मक रहेगा। बाधित कार्य पूर्ण होगें स्थायी सम्पत्ति का लाभ, समाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा परन्तु वित्तिय लेन देन में सतर्कता आवश्यक है। शत्रुपक्ष तथा स्वास्थ्य के सम्बन्ध में सचेत रहे। जीवन साथी का सहयोग प्राप्त होगा। विवाह के इच्छुक लोगों को जीवनसाथी के चयन में सफलता प्राप्त होगी। घर में मांगलिक कृत्य सम्पन्न होगे। सेवा क्षेत्र में पदवृद्धि की सम्भावना है। वर्षारम्भ में धनागम के क्षेत्र में बाधा उपस्थित होगी। भूमि-भवन वाहन प्राप्ति की दिशा में चल रहे प्रयास सफल होंगे। सन्ततिसुख प्राप्ति में उपस्थित विघ्न बाधायें दूर होगी। विद्यार्थीयो हेतु वर्ष उन्नतिकारक होगा। विद्यार्थियों को अपने-अपने दिशा में किए गये प्रयास सफल होंगे, लेकिन आलस्य एवं प्रमाद से बचें, प्रतियोगिता परीक्षा से जुड़े परीक्षार्थी समय का सदुपयोग करें। परिश्रम से सफलता मिलेगी। खाद्य पदार्थ जनित आकस्मिक गुप्त रोग उत्पन्न हो सकते हैं। माता पिता के स्वास्थ्य में भी बाधा होगी। कृषिक्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों को लाभ होगा। नौकरी में उन्नति के योग हैं। वर्षान्त में दाम्पत्य जीवन में कटुता संभव है, अनावश्यक विवाद एवं कलह संभव है। वर्ष 2023 के जनवरी, मई, जुलाई तथा सितम्बर मास अशुभ हैं।

गोचर विचार में सबसे महत्वपूर्ण होता है शनि का विचार करना। इस वर्ष 17 जनवरी 2023 से शनि कुम्भ राशि में गोचर कर चुके हैं और वर्षपर्यन्त इसी राशि में रहेंगे। कुम्भ राशि तुला से पाचवीं राशि है। फलदीपिका नामक ग्रन्थ में मन्त्रेश्वर ने जन्मराशि से पाचवीं राशि में शनिगोचर का फल **द्रविणसुतमतिप्रच्युतिं**[1] कहा है। अर्थात् जन्म राशि से पंचम राशि में शनि गोचर करता हो तो धन की कमी या धनहानि होती है। साथ ही सन्तानकष्ट और बुद्धिनाश अर्थात् मन में शांति न रहना, नाना प्रकार की चिन्ताओं तथा उद्वेगों से मन अशांत रहना आदि फल होते हैं।

गोचर विचार के दौरान शनि के बाद दूसरा सबसे महत्वपूर्ण ग्रह होता है बृहस्पति। क्योंकि शुभफलों की पुष्टता के लिए बृहस्पति को उत्तरदायी बताया गया है। इस वर्ष बृहस्पति मीन राशि में 21 अप्रैल 2023 तक और उसके बाद वर्षभर मेष राशि में रहेंगे।[2] यह दोनों राशियाँ क्रमशः तुला से छठी और सातवीं है। मंत्रेश्वर ने फलदीपिका में जन्मराशि से छठी राशि में बृहस्पति गोचर का अशुभफल और सातवीं राशि में बृहस्पति गोचर का शुभफल बताया है।

**षष्ठे मन्त्रिणि पीडयन्ति रिपवः स्वज्ञातयो व्याधयः ॥**[3]

अर्थात् - यदि बृहस्पति जन्मराशि से छठी राशि में गोचर करे तो अपने दायदों (चचेरे भाई आदि ) तथा शत्रुओं से पीड़ा एवं दुःसाध्य रोग आदि अशुभ फल प्राप्त होते हैं।

---

[1] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.22 पृष्ठ सं.635 मोतीलाल बनारसीदास

[2] श्रीजगन्नाथपञ्चाङ्गम् संवत् २०८०, प्रो.मदनमोहन पाठक, पृ.सं. 37

[3] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.19 पृष्ठ सं.633 मोतीलाल बनारसीदास

**यात्रा शोभनहेतवे वनितया सौख्यं सुताप्ति स्मरे ॥**[4]

अर्थात् - यदि बृहस्पति जन्मराशि से सातवीं राशि में गोचर करे तो किसी शुभ कार्य से यात्रा, अपनी स्त्री से सुख तथा पुत्र प्राप्ति आदि शुभफल प्राप्त होते हैं।

वार्षिक राशिफल विचार में आधुनिक ज्योतिर्विद् राहु को भी विशेष महत्व देते हैं। अतः राहु का विचार भी तुला राशि के वार्षिक राशिफल के सन्दर्भ में प्रस्तुत करते हैं। राहु इस वर्ष मेष एवं मीन राशियों में रहेंगे। अक्टूबर तक राहु की स्थिति मेष राशि में रहेगी उसके बाद नवम्बर में राहु राशि परिवर्तन करके मीन राशि में आएँगे।[5] मेष राशि तुला से सप्तम है और मीन राशि षष्ठ है। गोचर विचार ग्रन्थ में जगन्नाथ भसीन जी ने यवानाचार्य का मत **हिमगोः पूजमसादेर्धनम्** का कट्पयादि विधि से अर्थ करते हुए राहु के सप्तम भाव में गोचर करने पर शुभफल प्रदाता तथा षष्ठ भाव के गोचरगत राहु को अशुभफल प्रदाता बताया है।

गोचर विचार में जगन्नाथ भसीन ने राहु का चन्द्रलग्न से सप्तम भाव में गोचर का फल बताते हुए लिखा है –

*राहु चन्द्र लग्न से सप्तम भाव में जब गोचरवश आता है तो अचानक व्यापार में वृद्धि करता है। यात्रादि से धन लाभ होता है। राज्य की ओर से कृपा रहती है, मित्रों से सहायता मिलती है। शरीर में पित्त अथवा वायु दोष के कारण साधारण कष्ट होता है, मन में क्लेश रहता है।*

गोचर विचार में जगन्नाथ भसीन ने राहु का चन्द्रलग्न से सप्तम भाव में गोचर का फल बताते हुए लिखा है –

*राहु चन्द्र लग्न से छठे भाव में जब गोचरवश आता है तो दीर्घकालीन रोगों की उत्पत्ति करता है, मामाओं को बीमार करता है। मानहानि भी करवाता है। इस समय धन की हानि भी होती है तथा आय में कमी आ जाती है। आँखों में कष्ट रहता है और जातक कई प्रकार से व्यसन ग्रस्त हो जाता है।*

इस प्रकार निष्कर्ष रुप में वार्षिक राशि फल को तीन भागों में बाँटे तो राहु, शनि एवं गुरु के कारण 70% अशुभता और 30% शुभता रहेगी ।

## निष्कर्ष रुप में निम्नलिखित महत्वपूर्ण सावधानियाँ हैं -

- वित्तिय लेन देन में सतर्कता आवश्यक है।
- अनावश्यक विवाद एवं कलह संभव है।
- वर्षान्त में दाम्पत्य जीवन में कटुता संभव है।

---

[4] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.19 पृष्ठ सं.633 मोतीलाल बनारसीदास

[5] Mishra’s Indian Ephemeris 2023, Dr. Suresh Chandra Mishra, Page no. 114

- आलस्य एवं प्रमाद से बचें।
- रोजमर्रा के कार्यों में भी कुछ-कुछ विघ्न उपस्थित होंगे।
- धर्म से मन भटकेगा दृढ़तापूर्वक मन को धर्म में जोड़े रखें।

**अशुभ फलों के निराकरण हेतु सर्वसामान्य उपाय का निर्देश किया जा रहा है –**

- अशुभफलों के उपशमनार्थ शनि राहु तथा केतु का जप कराएँ
- शनि राहु तथा केतु के तत्तत् पदार्थों का दान करें
- विष्णुसहस्रनाम स्तोत्र का पाठ श्रेयस्कर होगा।
- शमी वृक्ष लगाने तथा वृद्धों व रोगियों की सेवा से कल्याण होगा।
- ओपल रत्न 6 कैरट या उस से अधिक वजन का धारण करें।
- एकादशी का व्रत करें ।

---

# वृश्चिक राशि का वार्षिक फलादेश वर्ष 2023

- **ब्रजेश पाठक ज्यौतिषाचार्य**

(लब्धस्वर्णपदक)

वृश्चिकराशि वाले जातको पर शनि की ढैय्या होने के कारण इस वर्ष संघर्षपूर्ण स्थिति होगी। लेकिन अन्य ग्रहों के शुभ गोचर से यह वर्ष मध्यम फलदायक सिद्ध होगा। आहार तथा वाक्शुद्धि का पूर्ण ध्यान रखें। तामसी पदार्थ का सेवन स्वास्थ्य तथा लोक व्यवहार को खराब कर देगा। क्रोध संवेग पर नियंत्रण रखें अन्यथा रक्त चाप एवं अनिद्रा की समस्या उपस्थित हो सकती है। आलस्य और प्रमाद से दूर रहें। वर्ष के पूर्वार्ध में जीवनसाथी के स्वास्थ्य में बाधा सम्भव है। दैनिक कारोबार बाधित हो सकता है। व्यवसाय क्षेत्र में अस्थिर आय रहेगी तथा कड़ी प्रतिस्पर्धा होगी। वैवाहिक जीवन में कटुता, कलह के कारण चित अशांत रहेगा, सन्तान के प्रति चिन्ता होगी। विवाहार्थियों को जीवनसाथी के चयन में चल रहे प्रयास कुछ विघ्न-बाधाओं के साथ सम्पन्न होंगे। अर्थसंग्रह में उपस्थित बाधा दूर होगी। धर्ममार्ग से विमुख न होवें तीर्थाटन अथवा परिवार में मांगलिक कृत्य संपादन का पूर्ण योग है। प्रगतिपूर्ण कार्यों में विघ्न तथा क्षति होगी। स्वास्थ्य प्रतिकूल रहेगा। दुर्घटना तथा अनावश्यक विवाद होगा। नौकरी पेशा वाले जातकों के स्थानान्तरण का योग है। राजनीति तथा समाज सेवा से जुडे जातकों को यश मिलेगा। यात्रा में कष्ट संभव है। वर्ष 2023 के जनवरी, अप्रैल, जून, अगस्त तथा दिसम्बर मास विशेष कष्टदायी हैं।

गोचर विचार में सबसे महत्वपूर्ण होता है शनि का विचार करना। इस वर्ष 17 जनवरी 2023 से शनि कुम्भ राशि में गोचर कर चुके हैं और वर्षपर्यन्त इसी राशि में रहेंगे। कुम्भ राशि वृश्चिक से चौथी राशि है। फलदीपिका नामक ग्रन्थ में मन्त्रेश्वर ने जन्मराशि से चौथी राशि में शनिगोचर का फल **स्त्रीबन्ध्वर्थप्रणाशं**[1] कहा है। अर्थात् जन्मराशि से चौथे शनि अशुभ फलकारक है। यह धननाश, स्त्रीनाश या स्त्री से कलह बन्धुओं से या उनके कारण कष्ट आदि फल प्रदान करता है।

गोचर विचार के दौरान शनि के बाद दूसरा सबसे महत्वपूर्ण ग्रह होता है बृहस्पति। क्योंकि शुभफलों की पुष्टता के लिए बृहस्पति को उत्तरदायी बताया गया है। इस वर्ष बृहस्पति मीन राशि में 21 अप्रैल 2023 तक और उसके बाद वर्षभर मेष राशि में रहेंगे।[2] यह दोनों राशियाँ क्रमशः वृश्चिक से पांचवीं और छठी है। मंत्रेश्वर ने फलदीपिका में जन्मराशि से पांचवीं राशि में बृहस्पति गोचर का शुभफल और छठी राशि में बृहस्पति गोचर का अशुभफल बताया है।

**पुत्रोत्पत्तिमुपैति सज्जनयुक्त राजानुकूल्यं सुते ॥**[3]

अर्थात् - यदि बृहस्पति जन्मराशि से पांचवीं राशि में गोचर करे तो पुत्र की उत्पत्ति सन्तान सुख, सज्जनों से समागम, राजा की कृपा आदि शुभफल प्राप्त होते हैं।

[1] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.22 पृष्ठ सं.635 मोतीलाल बनारसीदास

[2] श्रीजगन्नाथपञ्चाङ्गम् संवत् २०८०, प्रो.मदनमोहन पाठक, पृ.सं. 37

[3] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.19 पृष्ठ सं.633 मोतीलाल बनारसीदास

**षष्ठे मन्त्रिणि पीडयन्ति रिपवः स्वज्ञातयो व्याधयः ॥**[4]

अर्थात् - यदि बृहस्पति जन्मराशि से छठी राशि में गोचर करे तो अपने दायदों (चचेरे भाई आदि) तथा शत्रुओं से पीड़ा एवं दुःसाध्य रोग आदि अशुभ फल प्राप्त होते हैं।

वार्षिक राशिफल विचार में आधुनिक ज्योतिर्विद् राहु को भी विशेष महत्व देते हैं। अतः राहु का विचार भी वृश्चिक राशि के वार्षिक राशिफल के सन्दर्भ में प्रस्तुत करते हैं। राहु इस वर्ष मेष एवं मीन राशियों में रहेंगे। अक्टूबर तक राहु की स्थिति मेष राशि में रहेगी उसके बाद नवम्बर में राहु राशि परिवर्तन करके मीन राशि में आएँगे।[5] मेष राशि वृश्चिक से षष्ठ और मीन राशि पञ्चम है। गोचर विचार ग्रन्थ में जगन्नाथ भसीन जी ने यवानाचार्य का मत **हिमगोः पूजमसादेर्धनम्** का कद्दयादि विधि से अर्थ करते हुए राहु के षष्ठ भाव में गोचर करने पर अशुभफल प्रदाता तथा पञ्चम भाव के गोचरगत राहु को शुभफल प्रदाता बताया है।

गोचर विचार में जगन्नाथ भसीन ने राहु का चन्द्रलग्न से षष्ठ भाव में गोचर का फल बताते हुए लिखा है –

*राहु चन्द्र लग्न से छठे भाव में जब गोचरवश आता है तो दीर्घकालीन रोगों की उत्पत्ति करता है, मामाओं को बीमार करता है। मानहानि भी करवाता है। इस समय धन की हानि भी होती है तथा आय में कमी आ जाती है। आँखों में कष्ट रहता है और जातक कई प्रकार से व्यसन ग्रस्त हो जाता है।*

गोचर विचार में जगन्नाथ भसीन ने राहु का चन्द्रलग्न से षष्ठ भाव में गोचर का फल बताते हुए लिखा है –

*राहु चन्द्र लग्न से पंचम भाव में जब गोचरवश आता है तो धन ऐश्वर्य में अचानक वृद्धि करता है। सट्टे आदि से लाभ करवाता है। भाग्य तथा आय में भी वृद्धि करता है, परन्तु इसकी चन्द्र पर नवम दृष्टि के कारण मानसिक व्यथा भी हो।*

इस प्रकार निष्कर्ष रुप में वार्षिक राशि फल को तीन भागों में बाँटे तो राहु, शनि एवं गुरु के कारण 70% अशुभता और 30% शुभता रहेगी ।

## निष्कर्ष रुप में निम्नलिखित महत्वपूर्ण सावधानियाँ हैं -

- तामसी पदार्थों के सेवन बचें ।
- क्रोध संवेग पर नियंत्रण रखें ।
- आलस्य और प्रमाद से दूर रहें।
- कार्यक्षेत्र को लेकर सचेत रहें ।
- मानभंग को लेकर सचेत रहें ।
- स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें ।

---

[4] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.19 पृष्ठ सं.633 मोतीलाल बनारसीदास

[5] Mishra's Indian Ephemeris 2023, Dr. Suresh Chandra Mishra, Page no. 114

**अशुभ फलों के निराकरण हेतु सर्वसामान्य उपाय का निर्देश किया जा रहा है –**

- विशेष अनुकूलता प्राप्ति हेतु माता-पिता सहित गुरुजनों का नित्य आशीर्वाद लेते रहें।
- शनि एवं केतु का जप कराएँ।
- शनि एवं केतु के दान पदार्थों का शनिवार को दान करें।
- विष्णुसहस्रनामस्तोत्र का पाठ करें।
- पीपल, पलाश के वृक्ष की सेवा करें।
- प्रतिदिन ॐ नमो भगवते वासुदेवाय मंत्र का 108 बार जप करें।
- नीली 6 से 8 रत्ती धारण कर सकते हैं ।

---

# धनु राशि का वार्षिक फलादेश वर्ष 2023

- ब्रजेश पाठक ज्यौतिषाचार्य

(लब्धस्वर्णपदक)

धनु राशि के जातकों के लिए यह वर्ष सामान्य फलदायक है। अपने आप पर किया गया अति विश्वास कदाचित् आपके लिए प्रतिकूल फलदायक होगा। सन्तान का स्वास्थ्य व व्यवहार आपके मानसिक शान्ति को भंग करेगा। भूमि भवन वाहन सुख की प्राप्ति में चल रहे प्रयासों में विघ्न-बाधाएँ उपस्थित होंगी। विवाहार्थियों के जीवनसाथी के अन्वेषण में चल रही विघ्न बाधायें दूर होंगी। भाई-बहनों का स्वास्थ्य और व्यवहार आपको व्यथित कर सकता है। आपके पुरुषार्थ साहस तथा पराक्रम से आपके अन्यान्य कार्य सिद्ध होंगे। विद्यार्थियों को सफलता प्राप्ति हेतु किए गए श्रम सफल सिद्ध होंगे। घर में मांगलिक कृत्यों का सम्पादन होगा। अध्यात्म में चित्त वृत्ति लगेगी। ऐसी चित्त वृत्ति आपके विकास में सहायक सिद्ध होगी। जीवन साथी के स्वास्थ्य का पूर्ण ध्यान रखें। व्यवसाय तथा रोजगार में साधरण आय होगी, मंदी का रुख रहेगा। सहकारी कर्मचारियों की व्यस्तता होगी। सामाजिक गतिविधियों में सहभागिता बढ़ेगी। पदोन्नति का योग है। शिक्षा क्षेत्र से जुड़े जातक, प्रकाशक, लेखक, पत्रकार एवं अन्य बुद्धिजीवियों को यश प्राप्ति होगी। संगीत से जुड़े लोगों का यह मे वर्ष मिश्रित फल देगा। दूरस्थ यात्रा का योग है। धार्मिक कार्यों में है अभिरुचि बढ़ेगी एवं शुभ कार्य सम्पन्न होगें। स्वास्थ्य में अल्प बाधा रहेगी। मानसिक तनाव होगा। आर्थिक तथा वित्तिय लेन देन तथा पूंजी निवेश में सचेत रहे। व्यवसायिक क्षेत्र में बाधा आयेगी। किसी नवीन व्यवसाय का योग बनेगा। वर्ष 2023 के मार्च, मई, जुलाई तथा नवम्बर मास कष्टदायी हैं।

गोचर विचार में सबसे महत्वपूर्ण होता है शनि का विचार करना। इस वर्ष 17 जनवरी 2023 से शनि कुम्भ राशि में गोचर कर चुके हैं और वर्षपर्यन्त इसी राशि में रहेंगे। कुम्भ राशि धनु से तीसरी राशि है। फलदीपिका नामक ग्रन्थ में मन्त्रेश्वर ने जन्मराशि से तीसरी राशि में शनिगोचर का फल **स्थानभृत्यार्थलाभं**[1] कहा है। अर्थात् जब शनि जन्मकालीन चन्द्र राशि से तृतीय राशि में भ्रमण करे तो स्थानलाभ नयी जगह या नौकरी की प्राप्ति या नवीन रोजगार की प्राप्ति होती है। अच्छा पद मिलता है जिसमें अपने अन्तर्गत बहुत से नौकर कार्य करते हों। साथ ही  धनलाभ आदि शुभफल प्राप्त होते हैं।

गोचर विचार के दौरान शनि के बाद दूसरा सबसे महत्वपूर्ण ग्रह होता है बृहस्पति। क्योंकि शुभफलों की पुष्टता के लिए बृहस्पति को उत्तरदायी बताया गया है। इस वर्ष बृहस्पति मीन राशि में 21 अप्रैल 2023 तक और उसके बाद वर्षभर मेष राशि में रहेंगे।[2] यह दोनों राशियाँ क्रमशः धनु से चौथी और पांचवीं है। मंत्रेश्वर ने फलदीपिका में जन्मराशि से चौथी राशि में बृहस्पति गोचर का अशुभफल और पांचवीं राशि में बृहस्पति गोचर का शुभफल बताया है।

---

[1] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.22 पृष्ठ सं.635 मोतीलाल बनारसीदास

[2] श्रीजगन्नाथपञ्चाङ्गम् संवत् २०८०, प्रो.मदनमोहन पाठक, पृ.सं. 37

**दुःखैर्बन्धुजनोद्भवैश्च हिबुके दैन्यं चतुष्पाद्भयम् ॥**[3]

अर्थात् - यदि बृहस्पति जन्मराशि से चौथी राशि में गोचर करे तो बन्धुओं से दुःख, परम दीनता, चौपायों से भय आदि अशुभफल प्राप्त होते हैं।

**पुत्रोत्पत्तिमुपैति सज्जनयुक्त राजानुकूल्यं सुते ॥**[4]

अर्थात् - यदि बृहस्पति जन्मराशि से पांचवीं राशि में गोचर करे तो पुत्र की उत्पत्ति सन्तान सुख, सज्जनों से समागम, राजा की कृपा आदि शुभफल प्राप्त होते हैं।

वार्षिक राशिफल विचार में आधुनिक ज्योतिर्विद् राहु को भी विशेष महत्व देते हैं। अतः राहु का विचार भी धनु राशि के वार्षिक राशिफल के सन्दर्भ में प्रस्तुत करते हैं। राहु इस वर्ष मेष एवं मीन राशियों में रहेंगे। अक्टूबर तक राहु की स्थिति मेष राशि में रहेगी उसके बाद नवम्बर में राहु राशि परिवर्तन करके मीन राशि में आएँगे।[5] मेष राशि धनु से पञ्चम तथा मीन राशि चतुर्थ है। गोचर विचार ग्रन्थ में जगन्नाथ भसीन जी ने यवानाचार्य का मत **हिमगोः पूजमसादेर्धनम्** का कट्पयादि विधि से अर्थ करते हुए राहु के पञ्चम भाव में गोचर करने पर शुभफल प्रदाता तथा चतुर्थ भाव के गोचरगत राहु को अशुभफल प्रदाता बताया है।

गोचर विचार में जगन्नाथ भसीन ने राहु का चन्द्रलग्न से पञ्चम भाव में गोचर का फल बताते हुए लिखा है –

*राहु चन्द्र लग्न से पंचम भाव में जब गोचरवश आता है तो धन ऐश्वर्य में अचानक वृद्धि करता है। सट्टे आदि से लाभ करवाता है। भाग्य तथा आय में भी वृद्धि करता है, परन्तु इसकी चन्द्र पर नवम दृष्टि के कारण मानसिक व्यथा भी हो।*

गोचर विचार में जगन्नाथ भसीन ने राहु का चन्द्रलग्न से पञ्चम भाव में गोचर का फल बताते हुए लिखा है –

*राहु चन्द्र लग्न से चतुर्थ भाव में जब गोचरवश आता है तो सुख का नाश करता है। राज्य के विरुद्ध विद्रोह की भावना होती है। पैतृक स्थान से दूर ले जाता है। सम्बन्धियों से कोई सहायता नहीं मिलती। सुख में कमी करता है।*

इस प्रकार निष्कर्ष रुप में वार्षिक राशि फल को तीन भागों में बाँटे तो राहु एवं गुरु के कारण 30% अशुभता और राहु, गुरु एवं शनि के कारण 70% शुभता रहेगी ।

## निष्कर्ष रुप में निम्नलिखित महत्वपूर्ण सावधानियाँ हैं -

- दुर्घटना को लेकर सावधान रहें।
- पत्नी-पुत्र एवं परिवार के स्वास्थ्य को लेकर सावधान रहें।
- मानसिक अशान्ति को लेकर सावधान रहें।

---

[3] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.19 पृष्ठ सं.633 मोतीलाल बनारसीदास

[4] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.19 पृष्ठ सं.633 मोतीलाल बनारसीदास

[5] Mishra's Indian Ephemeris 2023, Dr. Suresh Chandra Mishra, Page no. 114

- धन के व्यवहार में सावधानी बरतें।
- यात्रा को यथासम्भव टालने का प्रयास करें।
- शत्रुओं से सचेत रहें।

**अशुभ फलों के निराकरण हेतु सर्वसामान्य उपाय का निर्देश किया जा रहा है –**

- उपचारार्थ शनि एवं राहु का जप कराएँ।
- शिवजी की आराधना करें।
- शनिवार को पीपल की १०८ प्रदक्षिणा करें।
- पीपल लगावें।
- गुरुवार को मीठा भोजन करें।
- विष्णुसहस्रनामस्तोत्र का पाठ नित्य पाठ करें।
- बड़े भाई, बहनोई, पिता, पितामहादि की सेवा करें उनके आशीर्वाद से सकल मनोरथ पूर्ण होंगे।

---

# मकर राशि का वार्षिक फलादेश वर्ष 2023

- **ब्रजेश पाठक ज्यौतिषाचार्य**

(लब्धस्वर्णपदक)

मकर राशि के जातक वर्ष 2017 से ही शनि की साढेसाती से गुजर रहे हैं।[1] जब जन्मराशि से 12वें भाव में शनि गोचरवश आता है तब साढ़ेसाती प्रारम्भ होती है तथा शनि के जन्मराशि तथा उससे दूसरे भाव से निकलकर तीसरे भाव में आ जाने तक रहती है। इस प्रकार शनि जन्मराशि सहित तीन राशियों (बारहवें, चन्द्र लग्न और द्वितीय) में 7.5 वर्ष भ्रमण कर लेता है।[2] साढेसात वर्ष तक जन्मराशि को प्रभावित करने के कारण ही इसे साढेसाती कहा जाता है। मकर राशि वालों के ऊपर साढेसाती अपने अंतिम चरण में चल रही है। वर्तमान में शनि उनकी राशि से द्वितीय अर्थात् कुम्भ में गोचर कर चुके हैं।[3] अतः साढेसाती अब मात्र 2.5 वर्ष ही शेष बची है। हाँलाकि साढेसाती का प्रभाव दशा के आधार पर एवं अष्टकवर्ग में प्राप्त शुभरेखा के आधार पर अलग अलग जातक के ऊपर भिन्न-भिन्न दिखाई पड़ता है। लेकिन सामान्यतया मकर राशि के जातकों के लिए वर्ष 2023 कैसा रहेगा इसका विवरण अर्थात् मकर राशि वालों का वार्षिक राशिफल साढेसाती के आलोक में प्रस्तुत किया जा रहा है। शनि की साढ़ेसाती की उग्रता के कारण इस वर्ष के ज्यादातर फल अशुभता लिए हुए होंगे। दुर्घटना अथवा अनावश्यक वाद विवाद होना संभावित है। वर्ष का पूर्वार्द्ध विशेषरूप से संघर्षों से भरा हुआ रहेगा। पूर्व से चले आ रहे प्रगतिशील कार्यों में बाधाएँ उत्पन्न होंगी। मन भ्रम की स्थिति में रहेगा जिसके कारण निर्णय क्षमता में कमी आएगी। धन का अपव्यय होगा और संचित धन अथवा वैभव नष्ट होंगे। मानसिक अशांति के कारण कार्यक्षेत्र के सहकर्मचारियों अथवा लोगों के साथ मनमुटाव होगा। इसी प्रकार दाम्पत्य जीवन में भी तालमेल कम ही रहेगा। रिश्तेदारों से भी सामञ्जस्य का अभाव रहेगा। माता-पिता एवं घर के बुजुर्गों की स्वास्थ्य संबंधी चिन्ता रहेगी। सामाजिक प्रतिष्ठा की हानि संभव है। सन्तान संबंधी बातें भी चिन्ता का विषय बनेंगी। वर्ष के अन्त में कुछ व्यावसायिक लाभ हो सकता है। फलदीपिका नामक ग्रन्थ में मन्त्रेश्वर ने जन्मराशि से द्वितीय में शनिगोचर का फल **धनसुतविहतिं**[4] कहा है अर्थात् शनि यदि जन्मराशि से द्वितीय में शनि गोचर करे तो विशेष रुप से धनहानि और संतान हानि होती है। इसलिए इन दो विषयों को लेकर मुख्यरुप से सावधान रहने की आवश्यकता है।

गोचर विचार के दौरान शनि के बाद दूसरा सबसे महत्वपूर्ण ग्रह होता है बृहस्पति। क्योंकि शुभफलों की पुष्टता के लिए बृहस्पति को उत्तरदायी बताया गया है। इस वर्ष बृहस्पति मीन और मेष राशि में रहेंगे। यह दोनों राशियाँ क्रमशः मकर से तीसरी और चौथी हैं। जन्मराशि से तीसरी या चौथी राशि का बृहस्पति अशुभफल ही देता है। मंत्रेश्वर ने तो

---

[1] https://www.drikpanchang.com/planet/transit/shani-transit-date-time.html?year=2017£

[2] गोचर विचार जगन्नाथ भसीन अ.4 पृष्ठ सं. 45, रंजन पब्लिकेशन्स

[3] विद्यापीठ-पञ्चाङ्ग पृष्ठ सं. 45,श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

[4] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.22 पृष्ठ सं.635 मोतीलाल बनारसीदास

फलदीपिका में जन्मराशि से तृतीय और चतुर्थ को बृहस्पति का वेधस्थान बताया है।[5] इस प्रकार बृहस्पति के पक्ष से भी मकर राशि वालों के लिए वर्ष 2023 में अशुभता की अधिकता ही पुष्ट हो रही है।

वार्षिक राशिफल विचार में आधुनिक ज्योतिर्विद् राहु को भी विशेष महत्व देते हैं। अतः राहु का विचार भी मकर राशि के वार्षिक राशिफल के सन्दर्भ में प्रस्तुत करते हैं। राहु इस वर्ष मेष एवं मीन राशियों में रहेगा। अक्टूबर तक राहु की स्थिति मेष राशि में रहेगी उसके बाद नवम्बर में राहु राशि परिवर्तन करके मीन राशि में आएँगे।[6] मीन राशि मकर से तृतीय है राहु का तृतीय भाव में गोचर करना शुभफल प्रदान करता है। मंत्रेश्वर ने फलदीपिका में तृतीय राशि को राहु का शुभ गोचर बताया है।[7] गोचर विचार में जगन्नाथ भसीन ने राहु का चन्द्रलग्न से तृतीय भाव में गोचर का फल बताते हुए लिखा है - राहु चन्द्र लग्न से तृतीय भाव में जब गोचरवश आता है तो शत्रुओं पर विजय हो, धन का लाभ हो, अकस्मात् भाग्य जाग उठे तथा मित्रों से लाभ रहे।[8]

इस प्रकार निष्कर्ष रुप में वार्षिक राशि फल को तीन भागों में बाँटे तो राहु के कारण 33% शुभता और शनि एवं बृहस्पति के कारण 66% अशुभता रहेगी।

## निष्कर्ष रुप में निम्नलिखित महत्वपूर्ण सावधानियाँ हैं -

* दुर्घटना को लेकर सावधान रहें।
* धन एवं संचित सम्पदा के नाश को लेकर सावधान रहें।
* संतान को लेकर सावधान रहें।
* मानसिक अशान्ति को लेकर सावधान रहें।
* धैर्य के साथ इस बुरे समय के व्यतीत होने की प्रतीक्षा करें आगे जीवन में कई शुभ फलों की प्राप्ति होनी है।

## अशुभ फलों के निराकरण हेतु सर्वसामान्य उपाय का निर्देश किया जा रहा है -

* प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर शनिदशनाम का पाठ करें।[9]
* प्रतिदिन स्नान के बाद दशरथकृत शनि स्तोत्र का पाठ करें।[10]

---

[5] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.07 पृष्ठ सं.625 मोतीलाल बनारसीदास

[6] Mishra’s Indian Ephemeris 2023, Dr. Suresh Chandra Mishra, Page no. 114

[7] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.02 पृष्ठ सं.621 मोतीलाल बनारसीदास

[8] गोचर विचार जगन्नाथ भसीन अ.1 पृष्ठ सं. 26, रंजन पब्लिकेशन्स

[9] कोणस्थ पिङ्गलो बभ्रुः कृष्णः रौद्रान्तको यमः, शौरी शनिश्चरो मन्दः पिप्पलाश्रयः संस्तुतः।
एतानि दश नामानि प्रातरुत्थाय यो पठेत् शनिश्चरो कृता पीड़ा न कदाचित् भविष्यति।।

[10] https://www.bhaktibharat.com/mantra/dashratha-shani-sotra

* शनिवार को शनि दीपदान करें।[11]

* शनिवार को अश्वत्थस्तोत्र[12] का पाठ करते हुए पीपल वृक्ष की 108 परिक्रमा करें।

* प्रतिदिन विष्णुसहस्रनामस्तोत्र का पाठ करें।[13]

---

[11]https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=579770947498176&id=100063958274060&mibextid=Nif5oz

[12] नित्यकर्म पूजाप्रकाश, श्रीलालबिहारी मिश्र, स्तुति प्रकरण, पृष्ठ सं. 336, गीताप्रेस गोरखपुर

[13] नित्यकर्म पूजाप्रकाश, श्रीलालबिहारी मिश्र, स्तुति प्रकरण, पृष्ठ सं. 322, गीताप्रेस गोरखपुर

# कुम्भ राशि का वार्षिक फलादेश वर्ष 2023

- ब्रजेश पाठक ज्यौतिषाचार्य

(लब्धस्वर्णपदक)

कुम्भ राशि के जातकों के लिए यह वर्ष विशेषरूप से अशुभ फलदायक है। शनि की साढ़ेसाती उलझनें प्रदान करती रहेंगी। स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखें, अस्थिजोड़ तथा जठर से सम्बन्धित रोगों से कष्ट होगा। सन्तति सुख में अवरोध उपस्थित होगा लेकिन सन्तति सुख प्राप्ति में किये गए प्रयास सफल होंगे। सर्वदा आपके धर्म एवं धैर्य की परीक्षायें होती रहेंगी। आपको अपने व्यवहारिक परुषता का त्याग करना होगा। विद्यार्थियों को विद्याक्षेत्र में श्रम से सफलता मिलेगी। क्रोध संवेग पर पूर्ण नियंत्रण रखें अन्यथा सर्वत्र विरोध का सामना करना पड़ेगा। जीवनसाथी के अन्वेषण में अवरोध उपस्थित होंगे। लेकिन विवाहित लोगों के दाम्पत्य जीवन में सुख होगा। अर्थसंग्रह में बाधा उपस्थित होगी। कुटुम्बी जनों के असन्तोष से आपके मन में क्षोभ उत्पन्न हो सकता है। अपने आहार एवं वाणी पर पूर्ण नियन्त्रण रखें। आर्थिक क्षेत्र में प्रयासो में सफलता मिलेगी। व्यवसाय का प्रसार होगा। अन्य स्त्रोत से आकस्मिक लाभ संभव है, सर्राफा व्यवसाय में लाभ होगा। ऋण तथा वित्त संबंधी लेन देन में सचेत रहें, भूमि सम्पत्ति आदि कार्यों में हानि तथा बाधा आयेगी। आजीविका क्षेत्र में सामन्जस्यता का अभाव होगा। नौकरी पेशा वाले जातक व्यस्त रहेगें। वर्ष 2023 के जनवरी, मार्च, मई तथा सितम्बर मास कष्टदायी हैं।

गोचर विचार में सबसे महत्वपूर्ण होता है शनि का विचार करना। इस वर्ष 17 जनवरी 2023 से शनि कुम्भ राशि में गोचर कर चुके हैं और वर्षपर्यन्त इसी राशि में रहेंगे। कुम्भ राशि कुम्भ से पहली राशि है। फलदीपिका नामक ग्रन्थ में मन्त्रेश्वर ने जन्मराशि से पहली राशि में शनिगोचर का फल **रोगाशौचक्रियार्ति**[1] कहा है।अर्थात् जब शनि जन्मकालीन चन्द्र राशि में ही भ्रमण करे तो बहुत अशुभ फलकारक होता है। इस दौरान दुःसाध्य रोग होते हैं। साथ ही परिवार में किसी की मृत्यु के कारण जातक को अशौच होता है।

गोचर विचार के दौरान शनि के बाद दूसरा सबसे महत्वपूर्ण ग्रह होता है बृहस्पति। क्योंकि शुभफलों की पुष्टता के लिए बृहस्पति को उत्तरदायी बताया गया है। इस वर्ष बृहस्पति मीन राशि में 21 अप्रैल 2023 तक और उसके बाद वर्षभर मेष राशि में रहेंगे।[2] यह दोनों राशियाँ क्रमशः कुम्भ से दूसरी और तीसरी है। मंत्रेश्वर ने फलदीपिका में जन्मराशि से दूसरी और तीसरी दोनों राशियों में बृहस्पति गोचर का अशुभफल ही बताया है।

**प्राप्नोति द्रविणं कुटुम्बसुखमप्यर्थे स्ववाचां फलम् ॥**

अर्थात् - यदि बृहस्पति जन्मराशि से दूसरी राशि में गोचर करे तो धनप्राप्ति, कुटुम्बसुख अपनी वाणी का इष्टफल अर्थात् उसकी बात को लोग ध्यान से सुनें या अपनी वाणी द्वारा जातक धन प्राप्त होना आदि शुभफल होते हैं।

---

[1] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.22 पृष्ठ सं.635 मोतीलाल बनारसीदास

[2] श्रीजगन्नाथपञ्चाङ्गम् संवत् २०८०, प्रो.मदनमोहन पाठक, पृ.सं. 37

**दुश्चिक्ये स्थितिनाशमिष्टवियुति कार्यान्तरायं रुजं ॥**

अर्थात् - यदि बृहस्पति जन्मराशि से तीसरी राशि में गोचर करे तो स्थितिनाश अर्थात् जगह छूटे या स्थानपरिवर्तन या आर्थिक या सामाजिक स्थिति में अंतर आना, अपने इष्ट जनों से वियोग कार्य में विघ्न, रोग आदि अशुभफल होते हैं।

इस प्रकार बृहस्पति के पक्ष से तो वृष राशि वालों के लिए वर्ष 2023 में मिश्रित फलों की पुष्टता हो रही है।

वार्षिक राशिफल विचार में आधुनिक ज्योतिर्विद् राहु को भी विशेष महत्व देते हैं। अतः राहु का विचार भी कुम्भ राशि के वार्षिक राशिफल के सन्दर्भ में प्रस्तुत करते हैं। राहु इस वर्ष मेष एवं मीन राशियों में रहेंगे। अक्टूबर तक राहु की स्थिति मेष राशि में रहेगी उसके बाद नवम्बर में राहु राशि परिवर्तन करके मीन राशि में आएँगे।[3] यह दोनों राशियाँ क्रमशः कुम्भ से तीसरी और दूसरी है। मंत्रेश्वर ने फलदीपिका में जन्मराशि से तीसरी राशि में राहु गोचर का शुभफल तथा दूसरी राशि में राहु गोचर का अशुभफल बताया है।[4] जन्म राशि से तीसरी राशि में स्थित राहु सुख तथा जन्मराशि से दूसरी राशि में स्थित राहु धननाश प्रदान करता है।[5]

गोचर विचार में जगन्नाथ भसीन ने राहु का चन्द्रलग्न से तीसरे भाव में गोचर का फल बताते हुए लिखा है -

*राहु चन्द्र लग्न से तृतीय भाव में जब गोचरवश आता है तो शत्रुओं पर विजय हो, धन का लाभ हो, अकस्मात् भाग्य जाग उठे तथा मित्रों से लाभ रहे।*

गोचर विचार में जगन्नाथ भसीन ने राहु का चन्द्रलग्न से दूसरे भाव में गोचर का फल बताते हुए लिखा है –

*राहु चन्द्र लग्न से द्वितीय भाव में जब गोचरवश आ जाए तो धन की अकस्मात् हानि हो। कुटुम्ब वालों से अनबन रहे विद्या में रुचि न हो। शत्रु अधिक बन जाए। आँख में कष्ट हो।*

इस प्रकार निष्कर्ष रुप में वार्षिक राशि फल को तीन भागों में बाँटे तो राहु एवं गुरु के कारण 20% शुभता और राहु, गुरु एवं शनि के कारण 80% अशुभता रहेगी ।

## निष्कर्ष रुप में निम्नलिखित महत्वपूर्ण सावधानियाँ हैं -

- दुर्घटना को लेकर सावधान रहें।
- धन एवं संचित सम्पदा के नाश को लेकर सावधान रहें।
- संतान को लेकर सावधान रहें।
- मानसिक अशान्ति को लेकर सावधान रहें।
- धैर्य के साथ इस बुरे समय के व्यतीत होने की प्रतीक्षा करें आगे जीवन में कई शुभ फलों की प्राप्ति होनी है।

---

[3] Mishra's Indian Ephemeris 2023, Dr. Suresh Chandra Mishra, Page no. 114

[4] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.2 पृष्ठ सं.621 मोतीलाल बनारसीदास

[5] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.24 पृष्ठ सं.637 मोतीलाल बनारसीदास

**अशुभ फलों के निराकरण हेतु सर्वसामान्य उपाय का निर्देश किया जा रहा है –**

- प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर शनिदशनाम का पाठ करें।[6]
- प्रतिदिन स्नान के बाद दशरथकृत शनि स्तोत्र का पाठ करें।[7]
- शनिवार को शनि दीपदान करें।[8]
- शनिवार को अश्वत्थस्तोत्र[9] का पाठ करते हुए पीपल वृक्ष की 108 परिक्रमा करें।
- अनुकूलता प्राप्ति हेतु घोड़े के नाल या नाव के कील से बनी लोहे की अँगूठी धारण करें।
- हनुमदाराधना के साथ सुन्दरकाण्ड का पाठ करें।
- पीपल व गूलर के वृक्ष लगाने से एवं उनकी सेवा करने से आपको सार्वत्रिक सफलता मिलेगी।

---

[6] कोणस्थ पिङ्गलो बभ्रुः कृष्णः रौद्रान्तको यमः, शौरी शनिश्चरो मन्दः पिप्पलाश्रयः संस्तुतः।
एतानि दश नामानि प्रातरुत्थाय यो पठेत् शनिश्चरो कृता पीड़ा न कदाचित् भविष्यति।।

[7] https://www.bhaktibharat.com/mantra/dashratha-shani-sotra

[8] https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=579770947498176&id=100063958274060&mibextid=Nif5oz

[9] नित्यकर्म पूजाप्रकाश, श्रीलालबिहारी मिश्र, स्तुति प्रकरण, पृष्ठ सं. 336, गीताप्रेस गोरखपुर

# मीन राशि का वार्षिक फलादेश वर्ष 2023

- **ब्रजेश पाठक ज्यौतिषाचार्य**

(लब्धस्वर्णपदक)

मीन राशि के जातक इसी वर्ष 17 जनवरी 2023 से शनि के कुम्भ राशि में गोचर करते ही शनि की साढेसाती के प्रभाव में आ चुके हैं।[1] जब जन्मराशि से 12वें भाव में शनि गोचरवश आता है तब साढ़ेसाती प्रारम्भ होती है तथा शनि के जन्मराशि तथा उससे दूसरे भाव से निकलकर तीसरे भाव में आ जाने तक रहती है। इस प्रकार शनि जन्मराशि सहित तीन राशियों (बारहवें, चन्द्र लग्न और द्वितीय) में 7.5 वर्ष भ्रमण कर लेता है।[2] साढेसात वर्ष तक जन्मराशि को प्रभावित करने के कारण ही इसे साढेसाती कहा जाता है। मीन राशि वालों के ऊपर साढेसाती अपने प्रथम चरण में चल रही है। वर्तमान में शनि उनकी राशि से बारहवें अर्थात् कुम्भ में गोचर कर चुके हैं।[3] अतः साढेसाती अभी पुरे 7.5 वर्ष शेष है। हाँलाकि साढेसाती का प्रभाव दशा के आधार पर एवं अष्टकवर्ग में प्राप्त शुभरेखा के आधार पर अलग-अलग जातक के ऊपर भिन्न-भिन्न दिखाई पड़ता है। लेकिन सामान्यतया मीन राशि के जातकों के लिए वर्ष 2023 कैसा रहेगा इसका विवरण अर्थात् मीन राशि वालों का वार्षिक राशिफल साढेसाती के आलोक में प्रस्तुत किया जा रहा है। शनि की साढ़ेसाती की उग्रता के कारण इस वर्ष के ज्यादातर फल अशुभता लिए हुए होंगे। दुर्घटना अथवा अनावश्यक वाद विवाद होना संभावित है। वर्ष का पूर्वार्द्ध विशेषरूप से संघर्षों से भरा हुआ रहेगा। व्यवसाय में अवनति सम्भव है। मानसिक कष्ट देने वाली परिस्थितियाँ तो अनेकशः उपस्थित होंगी। निरर्थक यात्रा तथा चोट-चपेट की सम्भावना बनी ही रहेगी। नौकरी पेशा वाले जातकों को प्रचुर कार्यभार के कारण मानसिक दबाव तो रहेगा, लेकिन कार्यक्षेत्र में स्थानान्तरण से कुछ सफलता मिलेगी। आकस्मिक रूप से परिवार के समक्ष कुछ विकट समस्याएँ आयेंगी। आपके कार्यक्षेत्र में उतार-चढ़ाव होता रहेगा, इसलिए सन्देह वाले किसी भी कार्य को करने से बचना चाहिए। गुप्त शत्रुओं के प्रति सावधानी बरतना आवश्यक है। पारिवारिक मतभेद बढ़ेंगे, जिन्हें नियंत्रित करने की आवश्यकता है, यदि स्थिति नियंत्रण से बाहर लगे तो मौन का ही आश्रय लेना ठीक है। न्यायालय से सम्बन्धित कार्यों में कुछ सफलता मिलेगी। माता-पिता को कष्ट होगा और सन्तान के प्रति भी चिन्ता बढ़ेगी। मीन राशि के जातक को अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहना बहुत आवश्यक है। मुख्यतया रक्त विकार की सम्भावना है। मीन राशि के विद्यार्थियों को अध्ययन क्षेत्र में ज्यादा मेहनत करने पर ही सफलता मिलेगी। वाहन-मकान आदि खरीदने के सामान्य योग हैं। अप्रैल, अगस्त और सितम्बर माह विशेष रूप से कष्टदायक रहेंगे।

फलदीपिका नामक ग्रन्थ में मन्त्रेश्वर ने जन्मराशि से बारहवीं राशि में शनिगोचर का फल इस प्रकार कहा है -

---

[1] https://www.drikpanchang.com/planet/transit/shani-transit-date-time.html

[2] गोचर विचार जगन्नाथ भसीन अ.4 पृष्ठ सं. 45, रंजन पब्लिकेशन्स

[3] विद्यापीठ-पञ्चाङ्ग पृष्ठ सं. 45,श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

**विश्रान्तिं व्यर्थ कार्याद्वसुहृतिमरिभिः स्त्रीसुतव्याधिमन्त्ये ॥** [4]

अर्थात् - जब शनि चन्द्र राशि से बारहवीं राशि में हो तो अनावश्यक कार्यों में वृथा लगे रहने के कारण व्यर्थ का परिश्रम होता है, अर्थात् उद्योग सिद्धि या सफलता न मिलने के कारण केवल कष्ट प्राप्ति होती है। शत्रुओं द्वारा धन का हरण कर लिया जाता है और स्त्री और पुत्रों को (व्याधि) रोगपीड़ा होती है । इसलिए इन तीन विषयों को लेकर मुख्यरुप से सावधान रहने की आवश्यकता है।

गोचर विचार के दौरान शनि के बाद दूसरा सबसे महत्वपूर्ण ग्रह होता है बृहस्पति। क्योंकि शुभफलों की पुष्टता के लिए बृहस्पति को उत्तरदायी बताया गया है। इस वर्ष बृहस्पति मीन और मेष राशि में रहेंगे। यह दोनों राशियाँ क्रमशः मीन से प्रथम और द्वितीय हैं। मंत्रेश्वर ने फलदीपिका में जन्मराशि से द्वितीय को बृहस्पति का शुभ गोचरस्थान बताया है।[5] इस प्रकार बृहस्पति के पक्ष से तो मीन राशि वालों के लिए वर्ष 2023 में शुभता की अधिकता ही पुष्ट हो रही है।

वार्षिक राशिफल विचार में आधुनिक ज्योतिर्विद् राहु को भी विशेष महत्व देते हैं। अतः राहु का विचार भी मीन राशि के वार्षिक राशिफल के सन्दर्भ में प्रस्तुत करते हैं। राहु इस वर्ष मेष एवं मीन राशियों में रहेगा। अक्टूबर तक राहु की स्थिति मेष राशि में रहेगी उसके बाद नवम्बर में राहु राशि परिवर्तन करके मीन राशि में आएँगे।[6] मीन राशि मीन से प्रथम ही है और मेष राशी मीन से द्वितीय है। गोचर विचार ग्रन्थ में जगन्नाथ भसीन जी ने यवानाचार्य का मत **हिमगोः पूजमसादेर्धनम्** का कढ्यादि विधि से अर्थ करते हुए राहु के प्रथम भाव में गोचर करना शुभफल प्रदाता और द्वितीय भाव में अशुभफल प्रदाता बताया है।

गोचर विचार में जगन्नाथ भसीन ने राहु का चन्द्रलग्न से प्रथम भाव में गोचर का फल बताते हुए लिखा है –

*राहु चन्द्र लग्न में यदि गोचरवश आ जावे तो मान में वृद्धि हो, धन सम्पत्ति बढ़े, पुत्रों के धन में वृद्धि हो। चूँकि राहु चन्द्र का शत्रु है, अतः मानसिक व्यथा भी हो।*[7]

गोचर विचार में जगन्नाथ भसीन ने राहु का चन्द्रलग्न से प्रथम भाव में गोचर का फल बताते हुए लिखा है –

*राहु चन्द्र लग्न से द्वितीय भाव में जब गोचरवश आ जाए तो धन की अकस्मात् हानि हो। कुटुम्ब वालों से अनबन रहे विद्या में रुचि न हो। शत्रु अधिक बन जाए। आँख में कष्ट हो।*[8]

यह भी ध्यान रखना बहुत आवश्यक है की गुरु और राहु की युति बहुत भीषण परिणाम देती है, अतः आपकी राशि में ही होने वाली ये युति समृद्धि का नाश, गृहनाश, कलंक, कठिन रोग आदि प्रदान कर सकती है।

---

[4] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.23 पृष्ठ सं.635 मोतीलाल बनारसीदास

[5] फलदीपिका गोपेश कुमार ओझा अ.26 श्लो.07 पृष्ठ सं.625 मोतीलाल बनारसीदास

[6] Mishra's Indian Ephemeris 2023, Dr. Suresh Chandra Mishra, Page no. 114

[7] गोचर विचार जगन्नाथ भसीन अ.1 पृष्ठ सं. 26, रंजन पब्लिकेशन्स

[8] गोचर विचार जगन्नाथ भसीन अ.1 पृष्ठ सं. 26, रंजन पब्लिकेशन्स

इस प्रकार निष्कर्ष रुप में वार्षिक राशि फल को तीन भागों में बाँटे तो राहु एवं गुरु के कारण 33% शुभता और राहु, शनि एवं बृहस्पति के कारण 66% अशुभता रहेगी।

## निष्कर्ष रुप में निम्नलिखित महत्वपूर्ण सावधानियाँ हैं -

* दुर्घटना को लेकर सावधान रहें।

* धन एवं संचित सम्पदा के नाश को लेकर सावधान रहें।

* पत्नी-पुत्र एवं परिवार के स्वास्थ्य को लेकर सावधान रहें।

* मानसिक अशान्ति को लेकर बहुत ज्यादा सावधान रहें।

* धैर्य के साथ इस बुरे समय के व्यतीत होने की प्रतीक्षा करें आगे जीवन में कई शुभ फलों की प्राप्ति होनी है।

## अशुभ फलों के निराकरण हेतु सर्वसामान्य उपाय का निर्देश किया जा रहा है -

* प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर शनिदशनाम का पाठ करें।[9]

* प्रतिदिन स्नान के बाद दशरथकृत शनि स्तोत्र का पाठ करें।[10]

* शनिवार को शनि दीपदान करें।[11]

* शनिवार को अश्वत्थस्तोत्र[12] का पाठ करते हुए पीपल वृक्ष की 108 परिक्रमा करें।

* प्रतिदिन विष्णुसहस्रनामस्तोत्र का पाठ करें।[13]

---

[9] कोणस्थ पिङ्गलो बभ्रुः कृष्णः रौद्रान्तको यमः, शौरी शनिश्चरो मन्दः पिप्पलाश्रयः संस्तुतः।
एतानि दश नामानि प्रातरुत्थाय यो पठेत् शनिश्चरो कृता पीड़ा न कदाचित् भविष्यति।।

[10] https://www.bhaktibharat.com/mantra/dashratha-shani-sotra

[11] https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=579770947498176&id=100063958274060&mibextid=Nif5oz

[12] नित्यकर्म पूजाप्रकाश, श्रीलालबिहारी मिश्र, स्तुति प्रकरण, पृष्ठ सं. 336, गीताप्रेस गोरखपुर

[13] नित्यकर्म पूजाप्रकाश, श्रीलालबिहारी मिश्र, स्तुति प्रकरण, पृष्ठ सं. 322, गीताप्रेस गोरखपुर